लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

रश्मि

33 वाँ अंक

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II

महाराष्ट्र, नागपुर

मुख पृष्ठ का परिचय

कोरोना काल में मिसाल बनें अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं को समर्पित मुख पृष्ठ की संकल्पना राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ उपमहालेखाकार / प्रशासन श्री एच. टी. फुलपाड़िया महोदय ने की है। विपदा में भी निस्स्वार्थ सेवा, मानवता, करुणा और साहस का परिचय देते हुए एकता के सूत्र में बंधे सभी कोरोना योद्धाओं को हमारा शत्-शत् नमन।

संरक्षक की कलम से...

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका रश्मि के 33 वें ई-अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। हिंदी पत्रिका रश्मि के माध्यम से एक ऐसे सार्थक वातावरण की संरचना होती है, जहाँ राजभाषा हिंदी के प्रयोग में वृद्धि के साथ-साथ कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को सामने आने का अवसर भी मिलता है। कला एवं संस्कृति की संवाहक होने के साथ-साथ पत्रिकाएं ज्ञान एवं अनुभव के संचरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी कार्यालयीन पत्रिकाओं का अतुलनीय योगदान है जो विभिन्न भाषायी क्षेत्रों के पाठकों की हिंदी में पढ़ने एवं लिखने की रुचि को जागृत करती हैं।

आज हिंदी न केवल हमारे देश की संपर्क भाषा है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इसको महत्व दिया जा रहा है। विज्ञान, उद्योग एवं प्रौद्योगिकी तथा अन्य क्षेत्रों में भी इसकी आवश्यकता महसूस की जा रही है।

पत्रिका के संपादक मंडल तथा रचनाकारों का अथक प्रयास सराहनीय है तथा आप सभी पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

आर. तिरुपति वेंकटसामी
महालेखाकार

रश्मि परिवार

संरक्षक
आर. तिरुपति वेंकटसामी
महालेखाकार

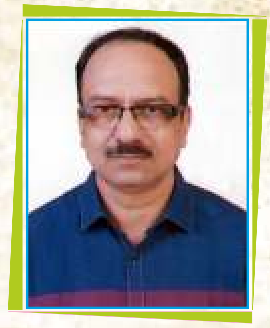

मार्गदर्शक
श्री एच. टी. फुलपाड़िया
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
एवं राजभाषा अधिकारी

✦ **समीक्षा समिति**
- श्री डी. आर. मिश्रा, व.ले.प.अ.
- श्री आर. के. शर्मा, स.ले.प.अ.
- श्री विपिन वर्मा, स.ले.प.अ.

✦ **संपादक**
- श्री पी. एस. सर्मा
  व.ले.प.अ./हिंदी अनुभाग

✦ **संपादन सहयोग**
- श्रीमती नीरजा टंडन, स.ले.प.अ./हिंदी अनुभाग
- श्री वसीम मिन्हास, वरिष्ठ अनुवादक

✦ **विविध सहयोग**
- श्री के. के. पाण्डेय, स.ले.प.अ./हिंदी अनुभाग
- सुश्री नीलम देवी, कनिष्ठ अनुवादक
- सुश्री मोनिका सोनी, डी.ई.ओ.

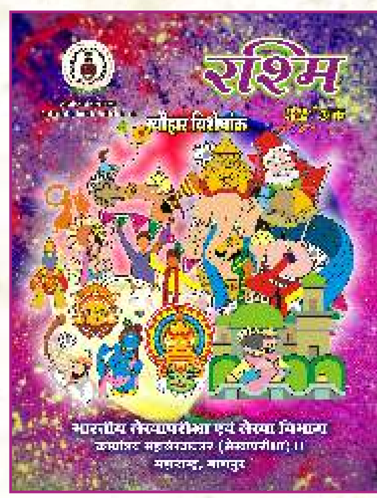

गतांक से आगे ...

अस्वीकरण : पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, उनसे कार्यालय / संपादक मंडल अथवा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। उससे उत्पन्न किसी भी वाद की जिम्मेदारी रश्मि परिवार अस्वीकार करता है।

मार्गदर्शक की अभिव्यक्ति ...

राजभाषा हिंदी को समर्पित कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका रश्मि का 33 वां ई-अंक प्रकाशित करना अत्यंत गौरव का विषय है। हिंदी भाषा में अपने विचारों व भावनाओं को अभिव्यक्त करने के माध्यम बनने के साथ-साथ यह पत्रिका राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कामकाज करने की मनोभावना को उजागर करती है। इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों को अपने सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का सुअवसर मिलता है।

कार्यालय में हिंदी के कार्य में निरंतर वृद्धि होना इस बात का प्रमाण है कि पत्रिका अनवरत अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल है। ज्ञान और अनुभव के संचरण में भी पत्रिका की अहम भूमिका होती है और इनमें प्रयोग की जाने वाली भाषा यदि सर्वसाधारण की भाषा हो तो पत्रिका चिरकाल तक सजीव बनी रहती है।

इसी विश्वास के साथ मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित संपादक मण्डल एवं सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ तथा इसके प्रगति की कामना करता हूँ।

एच. टी. फुलपाड़िया
राजभाषा अधिकारी एवं
व. उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संपादकीय ...

हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ सांस्कृतिक समृद्धि एवं विरासत का प्रतीक भी है। कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका रश्मि का निरंतर प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच इसकी लोकप्रियता का सशक्त प्रमाण है। गृह पत्रिका रश्मि के 33 वें ई-अंक का प्रकाशन सराहनीय है। गृह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विविध विषयों पर अपने ज्ञान एवं अनुभवों को सृजनात्मक रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है।

कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। रश्मि पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति पाठकों की सोच, समझ और ज्ञान को विकसित करता है । अतः मैं आशा करती हूँ कि रश्मि का यह अंक भी विगत अंकों कि भाँति ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर साबित होगा।

मैं हिंदी गृह पत्रिका रश्मि के 33 वें ई-अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देती हूँ। साथ ही मैं माननीय महालेखाकार महोदय तथा राजभाषा अधिकारी /व. उपमहालेखाकार (प्रशासन) को उनके बहुमूल्य मार्गदर्शन तथा प्रेरणा हेतु धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

पी. एस. सर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना / कविता	पृष्ठ क्र.
1.	इकिगाई श्री आर. के. चौबे	1
2.	दर्द श्रीमती कीर्ति गाडगे	3
3.	माँ तुझे सलाम है श्री प्रिंस कुमार	4
4.	जल का महत्त्व सुश्री प्रियंका कुमारी	5
5.	भारत क्या चाहता है ? सुश्री किरन देवी	6
6.	सच्ची लगन श्री अभिलेख कुमार निराला	7
7.	हिंदी है हमारी राष्ट्रभाषा कुमार अनय आचार्य	8
8.	विविधता में एकता श्री आकाश चतुर्वेदी	8
9.	स्वच्छ भारत अभियान का भारत में महत्व सुश्री मोनिका सोनी	9
10.	बचपन ! सुश्री नीलम	10
11.	कबीर एक अनूठा व्यक्तित्व श्री वैभव शर्मा	11
12.	सुधा मूर्ति – सादा जीवन और असाधारण मूल्यों की एक प्रतीक श्रीमती नीरजा टंडन	12
13.	हिसाब क्या रखने का ? श्री हेमंत धोंडरीकर	13
14.	कोनार्क : द सन टेम्पल श्री प्रशांत साहू	14
15.	बुद्धि बनाम शरारत श्री के. के. पाण्डेय	15
16.	मोबाईल श्रीमती सुनीता भोपसे	15
17.	चित्रकला सुश्री सेजल भोपसे	16
18.	संगीत लोकसमाज की मधुर भाषा कु. अमृता प्र. राऊत	17
19.	नए – नए काम श्री राजीव रंजन	18
20.	तन मन रहेगा हल्का सुश्री सोनिका सोनी	18
21.	राष्ट्र के विकास में युवा शक्ति का योगदान श्री वसीम मिन्हास	19
22.	एक चिंतन श्रीमती धरित्री परिडा	20
23.	एहसास प्यार का श्री दिलीप परिडा	20
24.	जीवन का लक्ष्य श्री किशन चतुर्वेदी	21
25.	‘अभिवादन’ श्रीमती कीर्ति गाडगे	21
26.	उम्मीद पर दुनिया कायम है श्रीमती कल्याणी	22
27.	वो बचपन भी कितना सुहाना था श्री हेमन्त गहरवार	22
28.	जो भी होता है अच्छे के लिए होता है श्री जे. के. तागडे	23
29.	होली सुश्री नीना वर्मा	23
30.	अंजाम श्रीमती अर्चना राज चौबे	24
31.	वर्तमान श्री नीरज मंथापुरवार	24
32.	वनों की पुकार श्री रणजीत बहादुर	25
33.	बेचैनी श्री आर. के. मंथापुरवार	26
34.	जीवन का सार श्री मयंक सोनी	27
35.	ज़िंदगी सुश्री मोनिका सोनी	27
36.	हिंदी सप्ताह 2021 के आयोजन पर विवरणात्मक रिपोर्ट	28
37.	हिन्दी सप्ताह 2021 के अवसर पर पुरस्कार वितरण की झलकियाँ	30
38.	लेखापरीक्षा के पन्नों से ...	32
39.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	34
40.	हिंदी कार्यशाला	35
41.	रश्मि के 32 वें ई-अंक का विमोचन	36
42.	राजभाषा सम्मान पुरस्कार वर्ष 2021	37
43.	नराकास पुरस्कार वितरण समारोह वर्ष 2021	38
44.	राजभाषा नियम, 1976	39

श्री आर. के. चौबे
व.ले.प.अ.

इकिगाई

जापान में एक कहावत है कि ...
''सौ वर्ष जीने की चाहत आप में तभी होगी जब आपका हर पल सक्रियता से भरा हो''।

इकिगाई, जीवन जीने की एक ऐसी कला या शैली है जिसे अपनाकर सुदीर्घ और स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है। जैसे-जैसे आप इन जानकारियों से रूबरू होंगे, ये आपको बेहद जाना-पहचाना लगेगा । दरअसल इकिगाई एक जापानी संकल्पना है जिसका सामान्यतः अर्थ है जीवन जीने की उद्देश्पूर्ण कला जिसमें आप खुद को ज्यादातर व्यस्त रखते हैं और उस सक्रियता से मिलने वाले आनंद और संतोष को जीते हुए उम्र का एक लम्बा सफर तय करते हैं। आप पहले इसे अपनाते हैं फिर आदतों में ढाल लेते हैं।

जापान के लोग आमतौर पर बाकी देश के लोगों से ज्यादा जीते हैं। निश्चित ही इसमें उनके अच्छे भोजन, ग्रीन टी और अच्छे मौसम का बड़ा योगदान है पर सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि इसके साथ जो एक महत्वपूर्ण वजह है वो है इकिगाई। दक्षिणी जापान में स्थित ओकिनावा प्रान्त में एक छोटा सा गाँव है ओगिमी जो दीर्घायु लोगों के गाँव के तौर पर जाना जाता है। तीन हज़ार लोगों के इस गाँव में विश्व के सबसे ज्यादा उम्रदराज़ लोग रहते हैं। विस्तार में जाने से पहले एक बात बता देना आवश्यक है कि जापान में रिटायरमेंट जैसा कोई शब्द अस्तित्व में नहीं है अर्थात वहां के लोग रिटायर होने की अवधारणा को कतई स्वीकार नहीं करते क्योंकि उन्हें अपने जीवन का उद्देश्यपूर्ण तरीके से जीना सर्वाधिक महत्वपूर्ण लगता है। सरकारी कार्यालयों में निश्चित ही एक तय उम्र होगी पर उसके बाद भी वे खाली नहीं बैठते, आराम की जिन्दगी नहीं जीते बल्कि एक और महत्वपूर्ण चरण के तौर पर वे सामजिक सक्रियता को चुनते हैं और उसमें व्यस्त रहकर खुद को निरोगी व युवा बनाये रखने के साथ ही अपने सामाजिक ढांचे को भी मजबूत और सकारात्मक बनाए रखने के दायित्व का निर्वहन करते हैं। एक सच और है जो शायद आपको चौंका दे कि दूसरे विश्व युद्ध के वक्त हुए हमले में इस गाँव के 200 से 300 लोग मारे गए थे परन्तु आश्चर्यजनक रूप से यहाँ के लोगों में उनके प्रति किसी भी किस्म की नकारात्मकता व नाराजगी नहीं है बल्कि वो तो उन्हें ''इचारीबो चोडे'' (भाईचारे) के आधार पर अपना बंधु ही मानते हैं अर्थात उनका मानना है कि गलतियाँ तो किसी से भी हो सकती हैं बस उन्हें माफ़ करने और सुधरने का जज्बा चाहिए और फिर सब ठीक हो जाता है। इसके साथ ही उनका सामजिक जीवन संघ भावना के तहत एक-दूसरे के सुख-दुःख में समान रूप से भागीदारी के साथ आगे बढ़ता है। वे सबसे प्यार से पेश आते हैं... दोस्ताना अंदाज़ में जीना, हल्का भोजन (80% से ज्यादा नहीं) और सही मात्रा में आराम व व्यायाम दोनों करते हैं। इकिगाई अपनाकर जीने से उनमें जो कुछ मुख्य बातें निकलकर सामने आईं, वे हैं कि इससे न केवल वे लम्बा जीवन जीते हैं बल्कि उनमें कैंसर, हृदयरोग, अल्जाइमर जैसी बीमारियाँ भी तुलनात्मक रूप से बहुत कम होती हैं।

पूरी दुनिया में दीर्घायु लोगों के पाँच टापू चुने गए हैं जिनमे पहले नंबर पर है ओकिनावा (जापान का दक्षिणी इलाका, जिसके बारे में हमने अभी पढ़ा)। दूसरा है सार्डिनीया इटली जहाँ के लोग भारी मात्रा में सब्जियां खाते हैं। इन्होनें भी अपनी लम्बी उम्र का राज़ सामाजिक मेलजोल की भावना को दिया है। इसके बाद क्रमशः लोमा लिंडा कैलीफिर्निया, द निकोया पेनिनसुला,

कोस्टा रिका और पांचवें नंबर पर है इकारिया ग्रीस, टर्की जहाँ हर तीन में से एक व्यक्ति 90 साल से ऊपर जीता है। इन सबके अध्ययन से ये निष्कर्ष निकला कि इनके दीर्घायु व खुशहाल जीवन का राज़ इनकी खाद्य संस्कृति, व्यायाम, सामाजिक जुड़ाव व इकिगाई अर्थात अपने जीवन के उद्देश्यों को जानना और अपनाना जैसी बातों में छुपा है। ये सभी अपने समय का प्रबंधन ऐसे करते हैं जिसमें तनाव व दुष्चिंता के लिए कोई जगह न हो या फिर कम से कम स्थान हो। वे मदिरा, मांसाहार व प्रसंस्कृत पदार्थों का सेवन न के बराबर करते हैं। तनावपूर्ण और कठिन व्यायामों की बजाय वे हल्के और जरूरी व्यायामों को चुनते हैं और करते हैं । ''हारा हाची बू'' अर्थात वे 80 प्रतिशत ही अपना पेट भरते हैं। इसके साथ ही वे ''मोआई'' अर्थात समान उददेश्यों के लिए बने किसी न किसी सामाजिक समूह से जुड़े होते हैं जिसमें से अधिकांशतः के लिए इकिगाई समाज सेवा ही होती है। वे सामूहिक रूप से मिलकर काम करने, खाने-पीने और नाच-गाने के साथ हंसी-खुशी वक्त बिताने को सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं। किसी भी मुश्किल में वे एक - दूसरे की मदद भी इसी तरह सामूहिक समूहों के ज़रिये करते हैं। एक स्वस्थ जीवन शैली का आवश्यक तत्व है नींद और आराम । विज्ञान ने भी यह साबित किया है कि युवा रहने के लिए सबसे प्रभावी साधन है पर्याप्त नींद । इससे हमारे शरीर में मेलटोनीन हार्मोन्स तैयार होते हैं जो हमें लम्बे समय तक युवा रहने और दिखने में सहायक होते हैं। अतः वे पर्याप्त नींद लेने को भी पूरी प्राथमिकता देते हैं।

''मैं अभी तक मरा नहीं हूँ''

ये कहा है अलेक्जेंडर इमिच ने, जिनका जन्म 1903 में पोलैंड में हुआ था और मृत्यु 111 वर्ष का होने पर 2014 में । इनका कहना था कि जब तक मृत्यु नहीं होती तब तक आप जीवित हैं और यही आपको महसूस भी करना चाहिए ।

इकिगाई में जिस एक बात का सबसे ज्यादा ध्यान रखा जाता है वो है ''अपनी दोस्ती को रोज सींचें'' और वहां पर सभी आपस में दोस्त होते हैं इसलिए उन सभी में एक किस्म की गर्मजोशी व सहकार की भावना हमेशा बनी रहती है। ओकिनावा जोकि दीर्घायु लोगों के पाँच टापुओं में से पहले नंबर पर है, के लोग बाक़ी जापान की तुलना में एक तिहाई शक्कर खाते हैं और लगभग आधा नमक।

भारत से शुरू हुआ योग जापान ने पूरी निष्ठा और आदर के साथ अपनाया और अपनी दिनचर्या में शामिल किया है जिसके अनोखे और अद्‌भुत परिणामों को देखते हुए अब ये वहाँ के लोगों के जीवन का अनिवार्य अंग बन गया।

इससे ये निष्कर्ष निकलता हैं कि सही जीवन शैली, खान-पान का सही तरीका, तनाव से दूरी, अच्छी नींद, स्वस्थ व उल्लासमय सामाजिक जीवन, पर्याप्त व्यायाम और आराम को अपनाकर हम खुद को एक लम्बे व सुंदर जीवन का तोहफा दे सकते हैं।

जैसा कि मैंने पहले कहा था कि इकिगाई के बारे में पढ़ते हुए आपको काफी कुछ जाना-पहचाना लगेगा तो अब ये साबित होता है कि जापान की इकिगाई और भारत की पुरातन योग आधारित जीवन शैली लगभग समान है ...अंतर है तो बस ये कि हम इनको अपनाने में देर कर देते हैं या एक किस्म का लापरवाही भरा उपेक्षित रवैया अपनाते हैं और वहां पर इसे बचपन से ही दैनिक कार्यों में शामिल किया जाता है। समानता व भाईचारा दोनों ही जगह का प्रधान गुण है और दोनों ही देश वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांतों को मानने वाले हैं। पर दुखद ये है कि जहाँ हम अपनी इतनी पुरातन और महान जीवन शैली से लगातार दूर होते जा रहे हैं वहीं जापान अपनी जड़ों को कसकर थामे लगातार आगे बढ़ रहा है ।

◆ ◆ ◆

श्रीमती कीर्ति गाडगे
व.ले.प.अ.

दर्द

शाम का वक्त था। मैं और मेरा बेटा हम दोनो पोर्च मे बैठे थे। कोविड़ की वजह से भारत मे ही क्या, समूचे विश्व मे लॉकडाऊन चल रहा था। वर्ष 2020 की बात है। सभी लोग घबराए हुए थे। कोविड ने हर ओर से मानव जाति पर आक्रमण कर दिया था। घर में ही सबको बंदी बना लिया था। हर कोई व्यक्ति अपने अपने घरो मे बंद था। 'न भूतो न भविष्यती' ऐसी स्थिती हो गई थी। टी.वी, पेपर या फिर कोई भी सोशल मीडिया का माध्यम खोलो तो वही खबरें चल रही थीं। आज देश में इतने लोगों की जाने गई, इतने लोग अस्पताल मे भरती है, ऑक्सीजन की किल्लत है इत्यादि। साँस भी लो तो एक डर सा लगता था, कहीं सांस के माध्यम से वायरस शरीर के अंदर तो प्रवेश नहीं कर रहा है। धीरे धीरे डर की जगह खौफ़ ने ले ली।

एक अधेड़ उमर की महिला उसकी छोटी बच्ची के साथ मेरे गेट के सामने खड़ी थी। तेज धूप के कारण उसका चेहरा बहुत ही काला नजर आ रहा था। पसीने से लथपथ महिला, मात्र बच्ची का सिर अपने साड़ी के पल्लू से ढ़कने की कोशिश कर रही थी। कोशिश इसलिए कह रही हूँ कि, साड़ी भी कई जगहो से फटी हुई थी। छोटी बच्ची रो रही थी। यह देखकर मुझे बहुत ही खराब लगा। मैं उठकर उसके पास गई और पूँछा कि तुम कहाँ रहती हो ! इतनी धूप में अपनी नन्ही सी बच्ची को लेकर सड़क पर क्यो घूम रही हो ? घर मे कोई और सदस्य नहीं है और क्या ? मेरे इतने सारे सवालों से वो महिला जरा भी विचलित नहीं हुई। शांत मुद्रा मे 'नही', ऐसे एक ही शब्द मे मुझे जवाब मिला। मैने जब उसकी तरफ देखा तो वो बेचारी रोने लगी। वायरस ने उसका हँसता खेलता घर शमशान कर दिया था। उसका पति किसी निजी अस्पताल में जॉब करता था। उस महिला को बच्ची के अलावा एक बेटा भी था। बेटी और बेटे के बीच मे करीब दो साल का अंतर था।

किडनी के पेशंट का डायलिसिस करना, यह उसके पति का काम था। निजी अस्पतालों को सरकार ने कोविड डेडिकेटेड अस्पताल घोषित किए जाने के बाद, उस महिला का पति जहां काम करता था, वह अस्पताल कोविड डेडिकेटेड अस्पताल में परिवर्तित हुआ, परिणाम स्वरूप कोविड पेशंट्स भर्ती होना शुरू हो गए। अस्पताल का पूरा स्टाफ उन पेशंटस् की सेवा में लग गया। उनको टाईम से दवाईयाँ देना, उनकी चिकित्सीय हालत पर करीब से नियंत्रण। इन सब कार्यों को बड़े ही तत्परता से किया जा रहा था ताकि उनकी हालत में शीघ्र सुधार हो सके और सबको अस्पताल से छुट्टी मिल सके। क्योंकि पेशंटस् के आने का प्रवाह रूकने का नाम नहीं ले रहा था। मानो समंदर मे लहरों ने उत्पात मचाया हो। उस महिला का पति जिसका नाम 'शंकर' था, बिना थके, बिना किसी शिकायत के निरंतर सेवा कर रहा था। वायरस और अस्पतालों मे जंग चल रही थी। वायरस जितना खतरनाक साबित हो रहा था, मेडिकल स्टाफ उतनी ही समर्थता से, तत्परता से उसका मुकाबला कर रहा था। शंकर की ड्यूटी वॉर्ड नंबर 3 मे लगी थी, करीब 10 बेड वहाँ पर थे, शंकर का अस्पताल से वापिस आने का कोई समय नहीं था। अप्रैल के माह मे तो वो दो दिन घर भी नही जा पाया था। जून माह की बात थी, सुबह शंकर घर से टिफिन लेकर निकला और कहकर गया आज मैं जल्दी आऊँगा क्यों कि अब पेशंट कम हो गये है। वो महिला भी खुश थी कि चलो आज मेरा पति जल्दी घर आएगा, लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। कोविड पेशंटस् की सेवा करते करते उसको कब वायरस ने घेर लिया, उसका पता भी नहीं चला। उसकी तबीयत बिगड़ती चली गई। उसको तुरंत उसी अस्पताल के आईसीयू में भर्ती किया गया। तीन दिन तक वायरस से लड़ने के बाद जिंदगी की जंग हार गया। कई जिंदगियाँ बचाने वाला खुद की जिंदगी नहीं बचा पाया।

उसके एक दिन बाद बड़ा बेटा भी चल बसा। घर का कर्ता पुरुष जाने से आसमाँ टूट गया था। आँखों से पानी की धारा रूकने का नाम नही ले रही थी। हार गई थी वो, लेकिन कहते है न कि, Show Must Go On. परंतु करे तो क्या करे? बारबार विनती करने के बाद भी अस्पताल प्रशासन ने नौकरी देने से इंकार कर दिया और आज वो दर दर को ठोकरें खा रही है। कहा कि जिस आदमी ने खुद की जान की परवाह किए बिना अस्पताल की सेवा की, उसी की ही मौत का तमाशा बना दिया। इन्सानियत खत्म हो चुकी थी। कौन विश्वास करेगा कि निःस्वार्थ सेवा का फल मीठा होता है। जो कड़वा सच उस महिला ने पिया उसके लिए कौन जिम्मेदार है? क्या एक गरीब की जिंदगी की कोई अहमियत नही है? माईक पर बड़ी-बड़ी बातें करना आसान है लेकिन निभाना मुश्किल। अस्पताल प्रशासन मे एक भी ऐसा सज्जन नही निकला, जो उस असहाय महिला की सहायता कर उसको अपने पैरों पर खड़े होने की शक्ति प्रदान कर सके। वायरस ने अपने-पराये की पहचान करा दी। हँसता खेलता घर एक मिनट मे वीरान हो गया।

मैने उसकी दुःखभरी दास्तान सुनकर, जो मदद करनी थी वो तो कर दी और उसे मेरे एक पहचान वाले निजी फर्म मे जॉब भी दिलवा दी। अब वह खुद का और बच्ची का गुजारा अच्छे से कर रही है।

इस रश्मि पत्रिका के माध्यम से मैं हमारे कार्यालय से जुड़े हर एक साथी से निवेदन करती हूँ कि, इस महाभयंकर प्राकृतिक आपदा मे थोड़ा सहयोग कर पीड़ित लोगों की जिंदगी संवारने के लिए संकल्प करें और सरकार की सहायता करें।

(1) किसी गरीब को हर माह अपनी-अपनी सामर्थ्य अनुसार दाल, चावल, आटा और शक्कर दें।

(2) लॉकडाऊन के समय किसी भी मजदूर की तनख्वाह न काटें और अगर किसी ने काटी हो तो तुरंत वापिस कर दें। मेरा इशारा घर में काम करने वाली महिलाओं की भी तरफ है।

(3) निराधार बच्चों की शिक्षा का प्रबंध करें।

(4) ईश्वर की इस सुंदर रचना मे कोई भूखा न सोये, इसका प्रयास करें।

"जय हिंद"

"जय महाराष्ट्र"

◆◆◆

श्री प्रिंस कुमार

एम.टी.एस.

माँ तुझे सलाम है

तूँ ही जन्मभूमि मेरी, तूँ ही कर्मभूमि है,
तिरंगे से हमारी शान है, अपनी ये पहचान है,
तुझ पर सहस्त्र जीवन भी कुर्बान हैं,
माँ तुझे सलाम है, माँ तुझे सलाम है।
तूँ वीरों की है धरती, जवानों का स्वाभिमान है,
अनेकता में भी एकता का सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है,
तूँ धर्मनिरपेक्षता की मूर्ति, जगत का पथ-प्रदर्शक महान है,
माँ तुझे सलाम है, माँ तुझे सलाम है।
तूँ अन्नपूर्णा की पूरक, गरीबों की शान है,
गाँधी, भगत व खुदीराम की देशभक्ति तेरा अभिमान है,
जगत प्रसिद्ध सोने की चिड़िया पर हमें आन-बान है,
माँ तुझे सलाम है, माँ तुझे सलाम है।
तूँ स्त्रियों का स्वर्ग, साधुओं का निवास है,
पशु मांगते घर जैसा, वैसा तू प्रवास है,
तूँ सरस्वती का प्रसाद और लक्ष्मी का वरदान है,
माँ तुझे सलाम है, माँ तुझे सलाम है।

◆◆◆

जल का महत्त्व

सुश्री प्रियंका कुमारी
एम.टी.एस.

"जल के महत्त्व को समझो इसे ना करो यूँ बेकार,
नही तो आने वाले दिनो मे जल को लेकर
मचेगा हाहाकार।"

हमारी माँ समतुल्य प्रकृति ने हमें कई सारे उपहार प्रदान किये हैं, जिसमें से सबसे महत्त्वपूर्ण है पानी। हमारे आस – पास इतनी ज्यादा मात्रा में पानी मौजूद है कि हम प्रकृति की इस महत्वपूर्ण भेंट के महत्त्व को भूल चुके हैं। हम मनुष्यों द्वारा जल जैसे महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन का या तो दुरुपयोग किया जा रहा है या ज्यादा मात्रा में उपयोग करके बर्बाद किया जा रहा है। भारी मात्रा में व्यर्थ करके इसकी उपलब्धता पर भी संकट खड़ा कर दिया है। हमने नदियों, महासागरों को दूषित करने के साथ ही भूमिगत जल स्तर को भी बिगाड़ दिया है।

हम जल के बिना पृथ्वी पर जीवन की परिकल्पना भी नही कर सकते हैं, इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम इसके महत्त्व को समझें। एक शोध द्वारा पता चला है कि पूरी पृथ्वी पर उपलब्ध जल में से मात्र 1 प्रतिशत जल ही ताजे पानी के रूप में मौजूद है। मनुष्यों द्वारा जल को भारी मात्रा मे व्यर्थ किया जा रहा है, अतएव् वह दिन दूर नहीं है जब जल भी सोने की तरह मँहगा और बेशकीमती हो जायेगा।

हम सभी को अब जल के महत्व को समझते हुए, जल संरक्षण की ओर अग्रसर होना होगा। बढते शहरीकरण की वजह से भूमिगत जल का स्तर तेजी से कम होता जा रहा है, इस वजह से खेती और सिंचाई इत्यादि जैसे हमारी जरूरी गतिविधियों के लिए बहुत ही कम मात्रा में बचा है। यदि हम जल संरक्षण करेंगें तो हमारे पास खेतों के लिए पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध होगा तथा इससे फसलों की पैदावार भी ज्यादा अच्छी होगी।

जल संरक्षण का एक अन्य उपाय भी है कि हमें पेड़ों की कटाई भी रोकनी होगी। क्योंकि पेड़ों की जड़े भूमिगत जल के स्तर को रोककर रखते हैं। इसके साथ–साथ ही हम अधिक संख्या में वृक्षारोपण करके एक हरी–भरी पृथ्वी का निर्माण भी कर सकते हैं।

"प्रकृति का यह अनमोल उपहार, जल को इस तरह तुम न करो बेकार।"

यदि हम जल को बचाना चाहते हैं, तो हमें अपने जल स्त्रोतों को भी बचाने की आवश्यकता है। हमारे द्वारा समुद्रों और नदियों में फैलाये जाने वाला प्रदूषण भी बहुत ही विकराल रूप धारण कर चुका है, जिससे जलीय जीवन भी नष्ट हो रहा है। हमें तत्काल रूख जल प्रदूषण को रोकने और हमारे द्वारा प्रदूषित नदियों को स्वच्छ करने का प्रयास करने की आवश्यकता है क्योंकि एक अच्छा जलीय परिस्थितिकी तंत्र हमारे ग्रह के जनजीवन के लिए बहुत आवश्यक है। इसके साथ ही जल संरक्षण के द्वारा हम पृथ्वी पर जीवन के सही संतुलन को भी स्थापित कर पायेगें।

"अगर आज जल न बचाओगे,
तो आने वाला कल देख ना पाओगें।"

◆ ◆ ◆

सुश्री किरन देवी
एम.टी.एस.

भारत क्या चाहता है?

1920 के दशक में भारत उपनिवेशवाद से पीड़ित था परंतु उपनिवेशवाद के खिलाफ भारतीयों की आत्मा में सरगर्मी हो रही थी। उसी दशक में गाँधीजी साऊथ अफ्रीका से भारत लौटे और उन्होंने ऐसे राजनैतिक शब्दावली का निर्माण किया जिसका इतिहास में अस्तित्व ही नहीं था। गाँधीजी ने काँग्रेस को लोगों की संस्था बनाया और लोगों में निहित डर को हटाया। उस दशक के नेताओं की महत्वकांक्षा छोटी नही थी। उन्हें स्वतंत्र भारत को विश्व गुरू बनाना था। इस महत्वकांक्षा का विरोध आंबडेकर जी जैसे नेताओं ने किया क्योंकि उनका मानना था कि एक ऐसे समाज में जहाँ सदियों से जाति-धर्म व लिंग के आधार पर भेदभाव व्याप्त है, वहाँ ऐसी महात्वाकाँक्षाऐं कैसे पूर्ण हो सकती हैं? परंतु ऐसे विरोध के बावजूद सभी नेताओं की साझी महत्वकाँक्षा, भारत को एक ऐसी इमारत बनाने की थी जिसकी नींव व्यक्ति की गरिमा हो। उसी दौरान भारतीयों में नयी स्फूर्ति विकसित होने लगी और साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में रचनात्मक विचारों का उदय होने लगा।

इन सब सकारात्मक विचारों के साथ 1935 से कहीं-कहीं लोगों में सांप्रदायिकता नामक बीज अंकुरित होने लगा था। इस प्रकार देखते ही देखते सकारात्मक विचारों का स्थान सांप्रदायिक विचारों ने ले लिया। ''जहर की कुछ बूँदे सबसे मीठे शहद को भी नष्ट कर देती हैं।'' इस प्रकार हमारे नेताओं की साझी महत्वाकाँक्षाऐं जो भारत को अखण्ड एवं व्यक्ति की गरिमा पर आधारित राष्ट्र बनाने की थी, वो भी भारत को दो राष्ट्रों में विभाजित होने से नही रोक पायी। इस प्रकार दो राष्ट्रों का निर्माण हुआ - भारत एवं पाकिस्तान। पाकिस्तान ने निर्णय लिया कि वो विभाजन की परियोजना को जारी रखेगा और धर्म को पहचान के लिए वरीयता देगा। भारत ने एक नई शुरूआत करने का निर्णय लिया। हमने विभाजन की सोच के ऊपर विरासत में मिले स्वतंत्रता संग्राम में निहित सोच को वरीयता दी। इसी प्रतिबद्धता के कारण एक बड़ा प्रयोग हुआ; विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र। हम भूतकाल की संध्या से संबंधित नहीं हैं, बल्कि भविष्य की दोपहर से संबंधित हैं। 21 वीं सदी की शुरूआत में उभरती हुई अर्थव्यवस्था ने बहुत से लोगों को गरीबी से मुक्त किया। हम सामाजिक लोकतंत्र, समानता व धर्म निरपेक्षता को अंगीकृत कर रहे थे। परंतु इन दिनों कुछ ऐसी नीतियों का विस्तार हो रहा है, जिससे समाज में नफरत बढ़ रही है। इसके परिणामस्वरूप सांप्रदायिकता समाज में एक बार फिर से अलगाववाद की भावना को प्रेरित करने लगी है। समाज के कुछ घटको द्वारा अलगाववाद को बढ़ावा मिल रहा है।

1930 के दशक की सीख से यह स्पष्ट है कि जब एक बार सांप्रदायिकता, जंजीरों से मुक्त हो जाती है, तो वह हमेशा राष्ट्र को विभाजित कर देती है। जिस प्रकार 1930 के दशक में सांप्रदायिकता ने पुर्नजागरण की ऊर्जा को क्षय कर दिया था, उसी प्रकार सांप्रदायिकता नये भारत की ऊर्जा को भी क्षय कर देगी। विभाजन का तर्क और स्वतंत्रता का तर्क पूरी तरह से विरोधात्मक है। जहाँ एक की नींव डर है, वहीं दूसरे की नींव आशा है। जहाँ एक का मतलब हिंसा है, वहीं दूसरे का मतलब एकता। हम 75 वें स्वतंत्रता वर्ष में कौन सा तर्क चुनेंगे - स्वतंत्रता या विभाजन?

◆ ◆ ◆

सच्ची लगन

श्री अभिलेख कुमार निराला
एम.टी.एस.

यह कहानी जो मैं आप से साझा कर रहा हूँ, माना जाता है कि यह बिल्कुल स्वार्थ विहीन सत्य घटना है जो मैंने तब सुनी जब मैं अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी कर जॉब के लिए गुडगाँव (हरियाणा) में प्रयासरत था। वो मध्य प्रदेश के सतना का निवासी था। उनका नाम मनोज मिश्रा था, तब वह भी अपनी एवीऐशन की पढ़ाई में लगे थे। हम एम टी लॉज गुडगाँव राजीव नगर में रहते थे।

आज के इस आधुनिक युग एवं शिक्षित वर्ग के लोग जो वैज्ञानिक सिद्धांत को ही मानते हैं किन्तु ईश्वर पर उनका विश्वास न के बराबर होता है लेकिन यह धरणा एक बड़े के जब घटित हुई तो आप की इस पर क्या प्रतिक्रिया होगी। यह घटना/चमत्कार मध्य प्रदेश के जिला आगर मालवा की है।

वहाँ के निवासी कहते हैं कि यह घटना जय प्रकाश नारायण के साथ हुई जो एक बहुत बड़े वकील सज्जन और ईमानदार व्यक्ति थे। उनका ईश्वर के प्रति अथाह प्रेम और विश्वास था। वह जो भी केस लेते थे, कहते थे सब परमात्मा की कृपा से अच्छा ही होगा। एक बार उनके हाथ ऐसा केस आया जो बेहद ही पेचीदा, जटिल और संजीदा था। कई सुनवाई के बाद भी उसका कोई परिणाम नहीं आया। तब उन्होंने कहा 'क्या परमात्मा इस बार कृपा नहीं करेंगे?' केस की तारीख के दिन वे बैजनाथ मंदिर पहले गये, माथा टेका, किन्तु मंदिर में प्रवेश करते ही उन्हें एक अलौकिक आभा की अनुभूति हुई। वे ध्यान करने के लिए परमात्मा के समीप बैठ गए। वे ध्यान में इतने लीन हो गये कि उन्हें वक्त का पता नहीं चला। काफी समय बीत जाने के बाद मंदिर के पुजारी ने जब शंखनाद किया तो वे शीघ्र ही ध्यान से जागकर सहज पुजारी से पूछा, 'कितना समय हो गया?' पुजारी जी ने कहा – ''11.30 बज गए है।' वकील साहब अतिशीघ्र भागकर कोर्ट पहुँचे और जज साहेब से कहने लगे, मुझे क्षमा कीजिए, मुझे विलंब हो गया। समय पर नहीं आ सका। मेरी अर्जी है कि आप मुझे कोई और तारीख दे दीजिए।''

उनकी बातों को सुनकर जज साहेब हंसने लगे, कैसी बात करते हैं जय नारायण, आपने जो केस किया था, वह तो समाप्त हो गया। जज साहेब कहने लगे, मैं घर से निकलते वक्त सोच ही रहा था कि पता नहीं केस का निर्णय आज क्या होगा, किन्तु नारायणजी आपने तो ऐसा हुनर दिखाया कि मैं भी अवाक रह गया और फैसला आपके पक्ष में ही करना पड़ा। इतने में कोर्ट में काम करने वाले अन्य वकील भी नारायण जी की बात पर हंसने लगे और बोलने लगे अरे वकील साहेब क्या कहने। कुछ देर पहले तो आपने केस जीता है, पुनः कौन से तारीख लेने आये हैं। उन सबकी बातें सुनकर वे बड़े विचार में पड़ गए और कहने लगे क्यों मजाक करते हो मेरी उम्र हो चली है इसलिए आप सब मिलकर मेरा उपहास उड़ा रहे हैं। तब सभी ने कहा, ''नहीं, नहीं ... वकील साहेब आपने सच में केस जीत लिया है।'' उन सभी की बातें सुनकर रजिस्टर मांगा और खोलकर देखने लगे कि अगर फैसला हुआ है तो मेरा हस्ताक्षर तो जरुरी होगा। जब वे अपना हस्ताक्षर देखे तो, हैरान हो गए और सोचने लगे कि मेरे जैसा हस्ताक्षर कौन कर सकता है। तभी सभी कहने लगे

आपके ही हस्ताक्षर हैं। अब उनको ये समझते देर नहीं लगी कि ये सब बैजनाथ की कृपा है। वे भाव विभोर हो गए और उसी क्षण भागते हुए मंदिर पहुँचे और उनको प्रणाम कर कहा 'आज आपने मेरा स्वरूप धारण कर मेरा कार्य किया है, आपकी जीतनी भी प्रशंसा करू कम है। मेरा जीवन आपको समर्पित करता हूँ।

कहते हैं उस दिन से जय नारायण ने सब कुछ त्याग कर सन्यास ले लिया। आगर मालवा के न्यायालय में जय नारायण की मूर्ति स्थापित है।

यह प्रभु के प्रति उनकी सच्ची लगन, आस्था, विश्वास और अथाह प्रेम ही तो था जो उन्हें मर कर भी अमर कर गए।

अतः हम सभी को अपनी निष्ठा और विश्वास ईश्वर में बनाए रखना चाहिए।

◆◆◆

हिंदी है हमारी राष्ट्रभाषा

कुमार अनय आचार्य
मधुसूदन आचार्य,
व.ले.प शाखा कार्यालय
मुंबई के भतीजा

हिंदी है हमारी राष्ट्रभाषा,
हिंदी है हमारी राष्ट्रभाषा।
हर एक हिंदुस्तानी बोले
यही भाषा, यही है मेरी आशा।
हिंदी भाषा पर होता है हमें गर्व
क्यों न हिंदी दिवस को मनाया जाए जैसे कोई पर्व।
हमारा देश महान है हिंदी से हिंदुस्तान हैं।
यही हमारी पहचान है। निवेदन है, इसके प्रति संवेदन है,
सम्मान को ठेस ना लगने पाए,
आओ हम सब हिंदी अपनाएं, आओ हम सब हिंदी अपनाएँ।

◆◆◆

विविधता में एकता

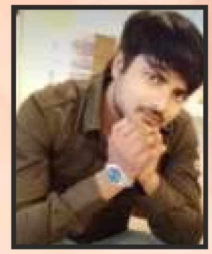

श्री आकाश चतुर्वेदी
भाई - सुश्री नीलम
क.हि.अ.

भारत एक ऐसा देश है, जो 'विविधता में एकता' की अवधारणा को सत्य साबित करता है। भारत एक अधिक जनसंख्या वाला देश है तथा पूरे विश्व में प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ विविधता में एकता का चित्रण देखा जाता है। विविधता में एकता भारत की शक्ति एवं मजबूती है जो आज एक महत्वपूर्ण गुण के रुप में भारत की पहचान कराता है।

विश्व में भारत पुरातन सभ्यता का एक जाना माना देश है, जहाँ वर्षो से कई प्रजातीय समूह एक साथ रहते हैं। यहाँ लगभग 1650 भाषाओं एवं बोलियों का इस्तेमाल किया जाता है। संस्कृति, परम्परा, धर्म और भाषा से अलग होने के बावजूद भी लोग यहाँ एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। देश के महान राष्ट्रीय एकीकरण अभिलक्षण के लिए विविधता में एकता को बढ़ावा दिया गया है। अनेक भ्रष्टचार और आंतकवाद के बावजूद भी भारत मजबूती और समृद्धि का आधार बना हुआ है।

यहाँ विविधता में एकता को बनाए रखने के लिए लोगों की मानवता मदद करती है। भारत में लोग अपनी संपत्ति के बजाए आध्यात्मिकता, कर्म और संस्कार को अत्यधिक महत्व देते हैं, जो उन्हें और पास लाती है। भारत में अधिकतर लोग हिन्दू हैं जो अपनी धरती पर सभी दूसरी अच्छी संस्कृतियों को अपनाने और स्वागत करने की क्षमता रखते हैं।

भारत को एक स्वतंत्र देश बनाने के लिए भारत के सभी धर्मो के लोगो द्वारा चलाये गये स्वतंत्रता अभियानों को हम नहीं भूल सकते हैं। भारतीयों की इस तरह की विशेषताएँ यहाँ पर ''विविधता में एकता'' को सिद्ध करती हैं।

◆◆◆

स्वच्छ भारत अभियान का भारत में महत्व

हिंदी सप्ताह 2021, निबंध प्रतियोगिता, प्रथम पुरस्कार

सुश्री मोनिका सोनी
डी.ई.ओ.

कहा जाता है कि ''स्वच्छ और सुंदर घर में ही ईश्वर का निवास होता है।'' एक स्वच्छ शरीर के साथ-साथ एक स्वच्छ घर, एक स्वच्छ शहर एवं एक स्वच्छ राष्ट्र का होना भी अनिवार्य है। हमारा भारत देश जो प्राचीन काल में सोने की चिड़िया कहा जाता था, वह धन-धान्य से सम्पन्न तो था ही अपितु प्राकृतिक रुप में भी धनी था। स्वच्छ वायु, स्वच्छ जल एवं स्वच्छ धरती प्रकृति की एक उत्कृष्ट देन थी। परंतु मध्य काल और आधुनिक युग आते-आते मानव की आकांक्षायें आकाश को छूने लगी और उसने प्रकृति का दोहन करना शुरू कर दिया। इसके साथ-साथ इसने कई नये-नये आविष्कार किये जो मानव के लिए उपयोगी तो थे परंतु उनके उपयोग के बाद बचा हुआ कचरा प्राकृतिक रुप से बहुत हानिकारक था जिसके फलस्वरूप भारत जैसे प्राकृतिक रूप से धनी देश में हर तरफ गंदगी का माहौल बन गया। यह कचरा इतने विशालकाय रूप में फैल गया कि भारत को पूर्ण रूप से स्वच्छ बनाने हेतु एक व्यापक स्तर पर अभियान चलाना पड़ा जिसे स्वच्छ भारत अभियान के नाम से जाना जाता है।

प्रारम्भ :

स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के जन्म दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 02 अक्टूबर, 2014 को लाल किले की प्राचीर से घोषणा की गयी। इस मिशन की शुरुआत महात्मा गाँधी के जन्म दिवस पर करने का उद्देश्य उनके एक स्वच्छ राष्ट्र बनाने के स्वप्न को पूरा करना था। स्वच्छ भारत मिशन के तहत प्रत्येक गाँव, शहर, जिला, मोहल्ले को पूर्ण रुप से स्वच्छ कराने हेतु सरकार द्वारा विविध क्रियाकलाप आयोजित किये जाते हैं एवं प्रत्येक वर्ष की समाप्ति पर सरकार द्वारा एक सर्वे किया जाता है जिसमें सर्वाधिक स्वच्छ तीन शहरों के नामों की घोषणा की जाती है। हाल ही में किये गये स्वच्छता सर्वेक्षण के अनुसार मध्य प्रदेश का ''इंदौर'' शहर भारत का सबसे स्वच्छ शहर घोषित किया गया है।

महत्व :

स्वच्छ भारत मिशन का भारत में अत्यधिक महत्व है। स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत करने का उद्देश्य भारत के हर कोने-कोने को स्वच्छ बनाना है। स्वच्छ भारत मिशन का उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब भारत देश के जन-जन की इसमें पूर्ण रूप से भागीदारी हो तथा प्रत्येक व्यक्ति को इस मिशन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना होगा अन्यथा यह मिशन सिर्फ एक मिशन बनकर रह जायेगा और भारत की स्थिति में कभी सुधार नहीं आयेगा।

प्रत्येक व्यक्ति को देश-प्रेम का भाव जागृत कर अपने देश को, अपने घर की भाँति समझकर इसे स्वच्छ करना होगा। सरकार को भी इस बात की ओर ध्यान देना होगा कि अभियान को सुचारू रूप से कार्यान्वित कराने हेतु कड़े से कड़े नियम भी बनाने होंगे जिससे हमारे भारत जैसे पवित्र देश को गंदा करने वाले व्यक्तियों पर उचित कार्रवाई की जा सके। सरकार को इस अभियान के प्रति लोगों में जागरुकता फैलानी होगी। कहा जाता है कि एक जागरूक नागरिक ही समग्र रुप से एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण में पूर्ण रुप से योगदान दे सकता है।

विभिन्न प्रकार की फैक्ट्रियों से निकलने वाला कचरा, धुआँ तथा अन्य हानिकारक पदार्थों को सही एवं व्यवस्थित तरीके से अपशिष्ट किया जाना चाहिए। हमारे पर्यावरण एवं धरती के लिए विष तुल्य पॉलिथीन के

उपयोग पर प्रतिबंध लगाना चाहिए - जिससे भारत देश की धरती तो स्वर्ग बन ही सके इसके साथ-साथ हमें जीवन देने वाली प्रकृति को भी कोई हानि न हो।

भारत जैसे 135 करोड़ आबादी वाले देश में अवशिष्ट कचरा, हानिकारक पदार्थो तथा गंदगी का फैलना स्वाभाविक है परंतु सरकार को इसके निपटान हेतु उचित प्रबन्धन करना होगा। जगह-जगह कूड़ेदान की व्यवस्था कर, सड़कों के किनारे उचित रुप से नालियाँ बनवाकर तथा समय-2 पर उनकी साफ-सफाई करवाकर हमारे देश को साफ-सुथरा बनाया जा सकता है।

विदेशों में साफ-सफाई हेतु अपनायी गयी विभिन्न प्रकार की प्रणालियों पर ध्यान देकर तथा उन्हें सीखकर एक नये व स्वच्छ भारत का विकास किया जा सकता है।

स्वच्छ भारत अभियान महज एक अभियान न होकर एक दिनचर्या बन जानी चाहिए तभी इसके सभी उद्देश्यों की पूर्ति संभव है। हमें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि हमें धरती को स्वच्छ बनाने या अपने आस-पास के वातावरण एवं स्थान को स्वच्छ बनाने के लिए पर्यावरण को हानि नहीं पहुँचानी है। बहुत से लोग पॉलिथीन से उत्पन्न हुए कचरे का अग्निदाह कर देते हैं जिससे हमारे वातावरण एवं स्वच्छ वायु को अत्यधिक नुकसान होता है।

हमें स्वच्छ मिशन के साथ-साथ अपने विचारों को भी स्वच्छ रखने की ओर ध्यान देना होगा क्योंकि एक अच्छे विचारों वाला मनुष्य ही एक अच्छे घर, एक अच्छे राज्य एवं एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।

सरकार के साथ-साथ भारत के प्रत्येक नागरिक का यह परम कर्तव्य है कि वह स्वच्छ भारत अभियान में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले तथा अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदान करे जिससे कि एक स्वच्छ भारत के निर्माण का जो स्वप्न सभी देशवासियों ने मिलकर देखा है उसे पूरा किया जा सके ताकि हम तथा हमारी भावी पीढ़ियाँ एक स्वच्छ वातावरण में जीवन यापन कर सकें।

"एक स्वच्छ स्थान एक स्वर्ग की भाँति प्रतीत होता है।" भारत को पूर्ण रुप से स्वच्छ बनाकर हम पर्यटन को बढ़ावा देकर आर्थिक रूप से समृद्ध हो सकते हैं तथा एक स्वर्ग का निर्माण कर सकते हैं।

आइये हम सब मिलकर इस अभियान में पूर्ण रुप से अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें, देश के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करें तथा सभी मिलकर इस अभियान को सफल बनाकर अपने भारत देश को पूर्ण रूप से स्वच्छ बनायें ताकि भारत सामाजिक रूप से विकास की निरंतर नई ऊँचाईयों को छू सके।

◆◆◆

बचपन !

सुश्री नीलम
क.हि.अ.

भीगी-भीगी आँखों में सपने सजा दे,
नन्हें-नन्हें हाथों में चूड़ियाँ पहना दे,
नाजुक-नाजुक होठों पर मुस्कान खिला दे,
काश कोई मेरा बचपन ला दे !
हर पराए को अपना बना दे,
बिछड़ गए जो उनसे मिला दे,
खुशियों की भरमार लगा दे,
काश कोई मेरा बचपन ला दे !
कहाँ गए वो सपनों के दिन
कहाँ गयीं वो प्यारी रातें,
कहाँ गए सावन के झूले,
कहाँ छुप गयीं वो बरसातें !
खो गयी मुस्कान कहाँ वो,
कहाँ गयीं वो मीठी बातें,
कहाँ गया बचपन वो मेरा
और वो खुशियों की सौगातें !
कोई उन दिनों को दुबारा बुला दे,
वो गुड़िया की शादी फिर रचा दे,
बचपन की बारिश में फिर से भिगा दे,
काश कोई मेरा बचपन ला दे !

◆◆◆

श्री वैभव शर्मा
डी.ई.ओ.

कबीर - एक अनूठा व्यक्तित्व

विद्वानों के अनुसार कबीर केवल समाज सुधारक ही नहीं थे, वे धर्म गुरू भी थे। भाषा पर उनका असाधारण अधिकार था। हिन्दी साहित्य में कबीर जैसा व्यक्तित्व शायद ही किसी का होगा। उनके संस्कार और दृष्टिकोण दोनों ही अनूठे थे।

कबीर अपने साधुओं से उस आनन्दमय विराट लोक की बात करते हैं जिससे अधिकांश लोग अपरिचित रहते हैं। उनके उस लोक में सदा बसन्त रहता है और निरतंर अमृत की वर्षा होती रहती है। ऐसी आनन्दमय अवस्था में रहते हुए वे साधारण मनुष्य को भुला नहीं देते।

वे व्यक्तिगत साधना के पक्षधर थे। वे निरर्थक ब्रह्मचर्य को पूजा और संस्कारों की विचारहीन गुलामी को पसन्द नहीं करते थे। उनकी दृष्टि में मनुष्यता ही प्रेम-भक्ति की प्रतीक थी। वे केवल अपने अनुभव पर ही चलने वाले व्यक्ति थे। वे किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, जाति-कुल और शास्त्र के बंधनों के बोध से मुक्त रहने के लिए उपदेश दिया करते थे। उनकी दृष्टि में सत्य को केवल वही व्यक्ति जान सकता है, जो इन बंधनों के जाल से मुक्त हो गया हो। सत्य का अनुभव होते ही इन बातों का कोई अर्थ नही रह जाता। मनुष्य को अनन्य भाव से भगवान की शरण में जाना चाहिए। गुरूकृपा पाने के लिए उनकी दृष्टि में आत्म-समर्पण का बड़ा महत्व था। इसके बिना मनुष्य अपने लक्ष्य को नही जाना पाता। वे ज्ञान को किसी एक ही जागीर नही मानते थे, उस पर सभी के अधिकार के पक्षधर थे।

वे प्रेम को ही सब कुछ मानते थे। उनकी दृष्टि में प्रेम सबसे ऊपर था। उनका विश्वास था कि -

'निगुरा महल न पाबई, पहुँचेंगे गुरू पूर।

बिना गुरू के वह महल नही मिल सकता। वहाँ पर वे ही पहुँचेगे, जिन्हें गुरू मिलेगा। वहाँ केवल गुरु कृपा वाले ही पहुँचते हैं, बिना गुरू वाले की वहाँ गति (प्रवेश) नहीं है।

हदद छौडि बेहर गया, रहा निरन्तर होय
बेहद के मैदान में, रहा कबीरा सोय।''

अर्थाव - ''हदद की सीमा में मनुष्य बसते है बेहद सीमा पार साधु बसते हैं, परन्तु जो असली सत्य है वे इन दोनो को छोड़ कर असीम में निवास करते हैं।''

कबीर उसी आनंदमय लोग की बात करते हैं, जहाँ सन्त नित्य निवास करते हैं। ऐसा था कबीर का अनूठा व्यक्तित्व।

◆◆◆

सुधा मूर्ति - सादा जीवन और असाधारण मूल्यों की एक प्रतीक

श्रीमती नीरजा टंडन
स.ले.प.अ.

कुछ लोग महान लक्ष्यों को हासिल करने का मकसद लेकर जिंदगी जीते हैं लेकिन सुधा मूर्ति एक ऐसी शख्सियत हैं जो जिंदगी को परोपकार के लिए और सादगी के साथ जीने में यकीन रखती हैं। एर्नेस्ट हेमिंग्वे ने किसी जगह कहा है कि अंधेरे में रहने के बजाय एक दिया रोशन करना कहीं बेहतर है। सिद्ध समाज सेविका और करिश्माई व्यक्तित्व वाली महिला सुधा मूर्ति की जिंदगी की कहानी भी इसी एक पंक्ति के इर्दगिर्द सिमटी है। उनका जीवन मेहनत और मशक्कत की अद्भुत कहानी है। उन्होनें अपनी सादगी और समझदारी के बल पर सफलता हासिल की है।

सुधा मूर्ति का जन्म 19 अगस्त 1950 में उत्तरी कर्नाटक में शिगांव में हुआ था विवाह से पहले उनका नाम सुधा कुलकर्णी था। वह बचपन से एक उत्सुक शिक्षार्थी थीं। 1960 के दशक में, सुधा मूर्ति इंजीनियरिंग में दाखिला लेने वाली पहली महिला थीं, जब इसे पुरुष डोमेन माना जाता था। उन्होंने बी.वी.बी.कालेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, हुबली से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की उपाधि ग्रहण की। वे राज्य में प्रथम आईं, जिसके लिए उन्हें कर्नाटक के मुख्यमंत्री से रजत पदक प्राप्त हुआ। सन 1947 में उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस से कंप्यूटर साइंस में मास्टर्स डिग्री प्राप्त की। उन्होंने अपने वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स से इस उपलब्धि के लिए उन्हें स्वर्ण पदक मिला। शिक्षा समाप्ति के बाद सुधा मूर्ति ने सबसे पहले ग्रेजुएट प्रशिक्षु के तौर पर टाटा कंपनी और बाद में दी वालचंद ग्रुप आफ इंडस्ट्रीज में काम किया।

सुधा मूर्ति के अनुसार, परोपकार का अर्थ धन देने से अधिक है। सुधा मूर्ति दृढ़ता से कहती हैं,पैसा आपकी पीठ पर भारी बैग है और आपको एक सरल हल्के जीवन का नेतृत्व करना चाहिए। वह मानती हैं कि किसी न किसी को तो ज़रूरतमंद लोगों की देखभाल करनी पड़ती है क्योंकि इससे उनकी ज़िंदगी प्रभावित हो सकती है। वह कहती हैं ईसा मसीह तथा भगवान बुद्ध की शिक्षाओं और जे.आर.डी. टाटा के शब्दों और जीवन ने मुझे न केवल प्रभावित किया है बल्कि मेरी पूरी जिंदगी को एक दिशा दी है।

सुधा मूर्ति इन्फोसिस फाउंडेशन की अध्यक्ष और गेट्स फाउंडेशन की सदस्य हैं। इंफोसिस फाउंडेशन 1996 में स्थापित एक सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट है। सुधा मूर्ति के सामाजिक कार्यों में स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, महिलाओं के सशक्तीकरण, सार्वजनिक स्वच्छता, कला और संस्कृति, और गरीबी उन्मूलन को प्राथमिक स्तर पर शामिल किया गया है। उन्होंने 1997 में इन्फोसिस फाउंडेशन के ट्रस्टियों में से एक बनने के बाद, समाज के कम-विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों को मजबूत करने में मदद की और लगभग 3500 पुस्तकालयों, करीब 10,000 शौचालयों, और लगभग 2300 घर, कई अस्पताल, पुनर्वास केंद्र, स्कूल भवन, अनाथालय बनाने में मदद की। उन्होने तमिलनाडु और अंडमान में सुनामी राहत कार्य, गुजरात में भूकँप से प्रभावित क्षेत्रों, आंध्र प्रदेश और उड़ीसा में बाढ़ और महाराष्ट्र और कर्नाटक में सूखे की स्थिति से निपटने हेतु राहत कार्य किए। सुधा मूर्ति ने कर्नाटक के सभी स्कूलों में कंप्यूटर और पुस्तकालय सुविधाओं की शुरुआत करने के लिए कई साहसिक कदम उठाये। सुधा मूर्ति ने आतंकी हमले के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले 800 सैनिकों के परिवारों को 10 करोड़ रुपये का दान दिया था। सुधा

मूर्ति का दृढ़ विश्वास है कि भारतीय कॉरपोरेट्स को समाज के लिए बहुत कुछ करना चाहिए, विशेष रूप से शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में।

महिला अधिकारों की समानता के लिए भी सुधा मूर्ति ने बहुत सारे काम किए। कम्प्यूटर साइंस के क्षेत्र में उन्हें महिलाओं के लिए महारानी लक्ष्मी अम्मानी कालेज की स्थापना करने का श्रेय जाता है जो आज बेंगलूर यूनिवर्सिटी के कम्प्यूटर साइंस विभाग के तहत बेहद प्रतिष्ठित कालेज का दर्जा रखता है। अधिक से अधिक महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से सुधा मूर्ति के ग्रामीण स्वच्छता तथा शिक्षा के बारे में जागरूकता फैलाने के प्रयासों को दुनिया भर में मान्यता दी गई और सराहना की गई।

सुधा मूर्ति अंग्रेजी और कन्नड़ भाषा की प्रख्यात द्विभाषी लेखिका भी हैं और उन्होंने आम आदमी की पीड़ाओं को अभिव्यक्ति देते हुए कई उपन्यास भी लिखे हैं। इन सभी उपन्यासों में महिला किरदारों को बेहद मजबूत और सिद्धांतों पर अडिग दर्शाया गया है। उन्होंने तकनीकी किताबें, यात्रा वृतांत, लघु कथाओं के संग्रह, नॉन-फिक्शन और बच्चों के लिए छह बेस्टसेलिंग किताबें लिखी हैं। उनकी किताबें काल्पनिक, गैर-काल्पनिक कथाओं के माध्यम से दान, आतिथ्य, सामान्य जीवन और आत्म-साक्षात्कार पर उनके दार्शनिक विचारों को व्यक्त करती हैं। 'मैंने अपनी दादी को कैसे पढ़ाया' उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है। सुधा मूर्ति की कुछ अन्य उल्लेखनीय कृतियाँ महाश्वेता, डॉलर बहू, द डे आई स्टॉप ड्रिंकिंग मिल्क, द मदर आई नेवर न्यु, जेंटली फॉल्स द बकुला, हाउस ऑफ कार्ड्स हैं। उनकी पुस्तकों का सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। सुधा मूर्ति को साहित्य के लिए आर.के. नारायण पुरस्कार (2006)और कर्नाटक सरकार की ओर से कन्नड़ साहित्य में उत्कृष्टता के लिए अत्तिम्बे पुरस्कार(2011)से भी नवाज़ा गया तथा भारत सरकार द्वारा 2006 में पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

सुधा मूर्ति का कहना है लोगों की सेवा करने से मुझे बहुत शांति मिली है। मेरे लिए अब और कुछ भी मायने नहीं रखता है। समाज सेवा के प्रति उनका जज्बा खुद ब खुदउनकी महानता का बखान करता है।

◆ ◆ ◆

हिसाब क्या रखने का?

श्री हेमंत धोंडरीकर
व.ले.प.अ.

काल के निरंतर बहते प्रवाह में
अपने कठिन समय का, हिसाब क्या रखने का?
भगवान ने / जिंदगी ने भर-भर के दिया तो,
जो मिला नहीं उसका हिसाब क्या रखने का?
जब दोस्तों ने इतना प्यार दिया है,
तो दुश्मनों के बोलने का, हिसाब क्या रखने का?
आने वाला हर पल प्रकाशमान है यहाँ,
तो रात के अंधेरे का, हिसाब क्या रखने का?
प्यार के दो पल ही काफ़ी है, जिंदगी जीने के लिये
तो उदास गुजरे हुए लम्हो का, हिसाब क्या रखने का?
मिले है फूल यहाँ कई परिजनों से,
फिर काँटो की चुभन का, हिसाब क्या रखने का?
जब सिर्फ यादों से ही मन प्रफुल्लित हो उठे,
तो मिलने न मिलने का, हिसाब क्या रखने का?
जब सभी यहाँ अच्छे है, बहुत अच्छे हैं,
तो चंद बुरे लोगों का, हिसाब क्या रखने का?

◆ ◆ ◆

कोणार्क : द सन टेम्पल

श्री प्रशांत साहू
एम.टी.एस.

हिन्दू धर्म में सूर्य देव की पूजा का विशेष महत्व है। ज्योतिष शास्त्र में सूर्यदेव को ग्रहों का राजा माना गया है। वेदों-पुराणों के मुताबिक सूर्य देव की आराधना से कुंडली के सभी दोष दूर होते हैं। कोणार्क का सूर्य मंदिर जोकि अपनी भव्यता और अद्भुत बनावट के कारण पूरे देश में प्रसिद्ध है और देश के सबसे प्राचीनतम ऐतिहासिक धरोहरों में से एक हैं।

भारत का सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध सूर्य मंदिर ओड़िशा राज्य में पुरी जिले के कोणार्क कस्बे में स्थित है। सूर्य भगवान को समर्पित यह कोणार्क मंदिर उड़ीसा के पूर्वी तट पर बना हुआ है, जोकि अपनी भव्यता और अद्भुत बनावट की वजह से मशहूर है। यह मंदिर एक बेहद विशाल रथ के आकार में बना हुआ है इसलिए इसे भगवान के रथ मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। कोणार्क शब्द कोण और अर्क से मिलकर बना है, जहाँ कोण का अर्थ कोना-किनारा एवं अर्क का अर्थ सूर्य से है। अर्थात सूर्य का कोना जिसे कोणार्क कहा जाता है। इसी वजह से इस मंदिर को कोणार्क सूर्य मंदिर के नाम से जाना जाता है।

कोणार्क सूर्य मंदिर को गंग राजवंश के प्रसिद्ध शासक राजा नरसिंह देव प्रथम ने 1243-1255 ईसवी के बीच करीब 1200 मजदूरों की सहायता से बनवाया था। आपको बता दें कि इस विशाल मंदिर की नक्काशी करने और इसे सुंदर रुप देने में करीब 12 साल का लंबा समय लग गया था। हालांकि इस मंदिर के निर्माण के पीछे कई पौराणिक और धार्मिक कथाएँ भी जुड़ी हुई हैं।

कोणार्क का सूर्य मंदिर उड़ीसा के मध्ययुगीन वास्तुकला का एक सर्वश्रेष्ठ नमूना है। इस मंदिर को कलिंग वास्तुकला की उपलब्धि का सर्वोच्च बिंदु माना जाता है क्योंकि इस प्रसिद्ध कोणार्क सूर्य मंदिर की वास्तुकला काफी हद तक कलिंगा मंदिर की वास्तुकला से मिलती-जुलती है। उड़ीसा के पूर्वी समुद्र तट पुरी के पास स्थित इस कोणार्क सूर्य मंदिर की संरचना और इसके पत्थरों से बनी मूर्तियां कामोत्तेजक मुद्रा में हैं, जो इस मंदिर की अन्य विशेषताओं को बेहद शानदार ढंग से दर्शाती हैं। एक विशाल रथ के आकार में बने कोणार्क सूर्य मंदिर में करीब 12 जोड़े विशाल पहिए लगे हुए हैं, जिसे करीब 7 ताकतवर घोड़े खींचते प्रतीत होते हैं। वहीं यह पहिए धूप-घड़ी का काम करते हैं और इनकी छाया से समय का अनुमान लगाया जाता है। आपको बता दें कि इस मंदिर के 7 घोड़े हफ्ते के सभी सातों दिनों के प्रतीक माने जाते हैं, जबकि 12 जोड़ी पहिए दिन के 24 घंटों को प्रदर्शित करते हैं। इसके साथ ही इनमें लगी 8 ताड़ियां दिन के आठों प्रहर को दर्शाती हैं।

ओड़िशा में स्थित इस सूर्य मंदिर से लाखों लोगों की धार्मिक आस्था भी जुड़ी है। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर के दर्शन मात्र से ही शरीर से जुड़े सभी दुख-दर्द दूर होते हैं और सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। इस मंदिर को ब्लैक पैगोडा के नाम से भी जाना जाता है, दरअसल इस भव्य मंदिर का ऊँचा टॉवर काला दिखाई देता है।

◆◆◆

बुद्धि बनाम शरारत

श्री के. के. पाण्डेय
स.ले.प.अ.

एक बार ट्रेन के एक डिब्बे में कुछ नवयुवक और एक वृद्ध साथ-साथ यात्रा कर रहे थे। नवयुवक काफी शरारती थे। उनको दूसरों को कष्ट देने में आनन्द की अनुभूति होती थी। वे सभी मिलकर डिब्बे में उपस्थिति वृद्ध व्यक्ति से शरारत करने लगे। इसी बीच एक नवयुवक के दिमाग में आया कि ट्रेन को रोकने के लिए चेन खींचते हैं। दूसरे ने कहा नहीं। इससे तो हम फँस जाएँगें, बल्कि ट्रेन की चेन खींचने का जुर्माना भी देना पड़ेगा। इतने में तीसरे ने बोला कोई बात नहीं। क्या हम पाँचों मिलकर जुर्माने की राशि (जो पाँच सौ रुपये होगी) नहीं दे सकते? अन्त में सभी की आपसी सहमति से कुल 1000/- (एक हजार) रुपये का संकलन किया और तय किया कि यदि पकड़े गये तो जुर्माना देकर छूट जाएगें। इसी दौरान चौथे नवयुवक ने कहा चिन्ता मत करो! हमें जुर्माना नहीं देना पड़ेगा! बाकी सब उसकी ओर देखकर पूछे, ऐसा कैसे होगा? उसने बोला हम इस बुड्ढ़े का नाम बता देंगे कि इसने ट्रेन की चेन खींची हैं। इस बात को उस वृद्ध व्यक्ति ने जब सुना तो आश्चर्यचकित हो गया और उन सभी नवयुवकों से अनुनय-विनय की, कि ऐसा न करें। किन्तु उन शरारती बच्चों ने एक न सुनी और वैसा ही किया जैसी की योजना बनायी थी।

चेन खींचते ही ट्रेन रुक गयी। जाँच पड़ताल करने वाले रेल्वे के कर्मचारी आए, तो उन नवयुवकों ने बिना पूँछे उस रेल कर्मचारी को बता दिया कि अमुक व्यक्ति (बुड्ढ़ा) ने ट्रेन की चेन खींची है। कर्मचारियों ने उस वृद्ध व्यक्ति से ऐसा करने का कारण पूँछा। उस वृद्ध व्यक्ति ने कुछ विचार करते हुए कहा : ‘‘साहब मैं क्या करता। इन बच्चों ने मिलकर मेरे एक हजार रुपये छीन लिए और मेरे पास कुछ भी नहीं बचा। मेरा पूरा पैसा अमुक नवयुवक ने रखा है!’’ वृद्ध व्यक्ति द्वारा बताए गए नवयुवक की जाँच हुई तो उसकी जेब में पूरा एक हजार रुपये मिले (जो उन युवको ने इकट्ठा किए थे।) रेल कर्मचारियों ने युवक से पैसा लेकर वृद्ध को दे दिये और शाबासी भी दी। उन नवयुवको को पकड़कर अगले स्टेशन पर पूछताछ के लिए ले जाया गया।

जाते हुए नवयुवकों (बच्चों) ने उस वृद्ध की ओर देखा और वृद्ध व्यक्ति ने अपने सिर पर ऐसे हाथ फेरा, मानों कह रहा हो कि मेरे बाल ऐसे ही थोडे सफेद हुए हैं।

मोबाईल

श्रीमती सुनीता भोपसे
व.ले.प.

संचार की दुनिया में
मोबाईल लाया क्रांति।
तार से बेतार कर
कोसों की दूरी को
मिनटों में बदल कर।
इससे मानव ने कर ली
सारी दुनिया को मुट्ठी में!
लेकिन रिश्ते तार-तार हो गए,
मन से कोसों दूर हो गई शांति!
मोबाईल लाया क्रांति!
पास होकर भी
दूर हो गए अपने,
अपने तो हो गए सपने!
मोबाईल लाया क्रांति!
मोबाईल लाया क्रांति!

◆ ◆ ◆

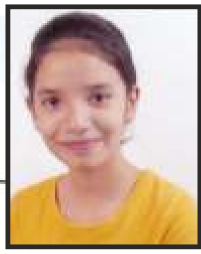

सुश्री सेजल भोपसे
पुत्री श्रीमती सुनीता भोपसे
व.ले.प.

संगीत
लोकसमाज की मधुर भाषा

कु. अमृता प्र. राऊत
स.ले.प.अ., शाखा कार्यालय

संगीत एक ऐसी भाषा है जो सिर्फ शब्दों से नहीं बल्कि आत्मा से बोली जाती है और अंतरात्मा तक पहुँच कर हमें शांति एवं ख़ुशी का एहसास दिलाती है। संगीत बहुत ही मधुर और वैश्विक भाषा है। संगीत हमारे जीवन में एक अभिन्न एवं आवश्यक भूमिका निभाता है। संगीत मनुष्य पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालता है। यह स्मृति को बढ़ावा दे सकता है, कार्य सहनशक्ति का निर्माण कर सकता है, आपके मूड को हल्का कर सकता है, चिंता और अवसाद को कम कर सकता है, थकान को दूर कर सकता है, दर्द के प्रति आपकी प्रतिक्रिया में सुधार कर सकता है और आपको अधिक प्रभावी ढंग से काम करने में मदद कर सकता है।

संगीत के विभिन्न प्रकार होते हैं भारत में इसके दो प्रकार हैं: शास्त्रीय संगीत व भाव संगीत। भाव संगीत को हम तीन भागों में बांट सकते हैं :

1) चित्रपट संगीत या फिल्मी गीत (ऐसे गीत जिनका प्रयोग चित्रपट/फिल्म में किया जाता है)

2) लोक गीत (लोकगीत गांवों में गाए जाते हैं। क्षेत्र के आधार पर इन गीतों की भाषाएं बहुत भिन्न होती हैं।

3) भक्ति संगीत (भक्ति गीतों के द्वारा भगवान/ईश्वर की प्रार्थना, गुणगान किया जाता है।)

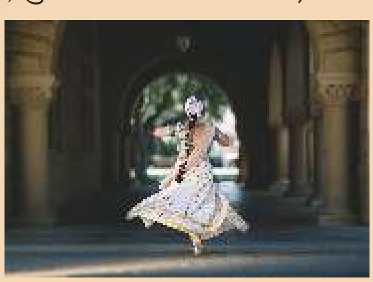

भारत का संगीत अपनी सांस्कृतिक सुंदरता को दर्शाता है।

लोग आपने मनोभाव के अनुसार, संगीत का आनंद लेते है। आजकल कुछ लोग अपने सभी समय में संगीत सुनने के आदी हो चुके हैं जैसे कि चलते समय, दौड़ते समय, नृत्य करते समय, व्यायाम के समय, घर के रास्ते में, आदि। लोग ध्यान करते समय भी शांत और सुखदायक संगीत सुनते हैं जिससे ध्यान केंद्रित करने मे सहायता मिलती है, मन एकाग्रचित और शांत होता है। बच्चे पढ़ते समय भी शांत संगीत सुनते है। आजकल बड़ी कँपनियों के कार्यालयों में धीमी गति से संगीत बजाने का चलन है, यह कर्मचारियों के प्रदर्शन को बढ़ाने के साथ-साथ दिमाग को ताजा, शांतिपूर्ण, सकारात्मक विचार लाने में सहायक होता है।

आजकल हम देखते हैं कि विभिन्न जगहों पर संगीत की प्रतिस्पर्धा भी की जाती है और भारत में लोग बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। बच्चे शास्त्रीय संगीत की क्लास लगा लेते हैं। संगीत का महत्व बच्चों से लेकर युवा वर्ग और बुजुर्गों तक के जीवन में है। सुबह-सुबह मंदिर में भाव संगीत सुनकर रोम-रोम खिल उठता है। शादियों, पार्टी आदि में चित्रपट संगीत सुन कर मन नृत्य करने का करता है। बस इतना ध्यान रखना है कि संगीत सुनने के दौरान हेडफ़ोन का उपयोग नहीं करना चाहिए, इससे कानों की व मानसिक बीमारियाँ उत्पन्न होती है।

जीवन में संगीत खुशी और शांति प्राप्त करने का साधन है। यह जीवन की सभी समस्याओं से दूर रखता है और समाधान देता है।

◆ ◆ ◆

श्री राजीव रंजन
डी.ई.ओ.

नए - नए काम

दुनिया में जितने भी नए आविष्कार हुए हैं, उनमें से ज्यादातर जब सामने आए, तो बहुसंख्यक लोग उनकी खामियाँ बताने वाले थे। हमारे जीवन के आंतरिक धरातल पर भी ऐसा ही होता हैं। हम जब कुछ नया करना चाहते हैं, हमारे भीतर का ही एक हिस्सा कहता हैं कि छोड़ो न यार, जैसा है वैसा ही चलने दो। नई राह में तो बड़े खतरे हैं। डेविड चार्ल्स ऑस्टिन ब्रिटेन के महान विज्ञानी व लेखक थे। वह कहते थे, अपने कार्यो को गौर से देखें, अगर आप पाते हैं कि सब कुछ एक सीधी रेखा जैसा है, तो समझिए कि कुछ गडबड़ है। कुछ उतार-चढ़ाव तो होना ही चाहिए। ये जाहिर करते हैं कि आप एकसार जिंदगी के आदी नहीं हैं, कुछ न कुछ नया करने की आप में जिद है। वह कहते थे कि अगर आप अपने जीवन के प्रति सम्मान रखते हैं तो एक जैसी व्यवस्था में रहने के आदी नहीं हो सकते। दरअसल, आधुनिक तकनीकी भाषा में कहे तो हमें खुद को बीच-बीच में री-प्रोग्रामिंग करते रहना चाहिए। कई बार हालात प्रतिकूल होते हैं। ऐसे वक्त में अपनी राह बदलने का मतलब यह नहीं हैं कि जिंदगी की गाड़ी बेपटरी हो गई है। इसका मतलब यह है कि हम चीजों की सैंपलिंग कर रहे हैं एवं नई चीजें सीख रहे हैं।

गुरूदेव टैगोर ने जब चित्रकला में दिलचस्पी दिखाई और कूची लेकर कैनवास के आगे नियमित बैठने लगे, तब उनकी उम्र 60 वर्ष थी। कुछ ही वर्षो में उन्होंने कमाल की पैटिंग बनाई। यह तय है कि हम जितना अनुभव सहेजते हैं, दुनिया को देखने का हमारा तरीका उतना ही परिष्कृत होता जाता है और हम अपने काम को लेकर उतना ही आनंदित होते हैं।

◆◆◆

सुश्री सोनिका सोनी
बहन, सुश्री मोनिका सोनी
डी.ई.ओ.

तन मन रहेगा हल्का

न बीती बात का चिंतन हो,
न सोचें ज्यादा कल का।
वर्तमान को सफल करें तो तन-मन रहेगा हल्का ।।
सरल बनाएँ अपने मन को,
जीवन नाम न उलझन का।
क्षमा करें और विस्मृत कर दें,
तो जीवन रहेगा हल्का।।
नित उठ याद करें ईश्वर को,
समय सुहाना उस पल का।
सत्कर्मों में समय बिताएँ,
हर बोझ रहेगा हल्का।।
प्रेम- भाव से जोड़े नाता,
हर रिश्ता सच्चे दिल का।
सबकी राहों पर पुष्प बिछाकर,
बन जाए जीवन मखमल का ।।
शुद्ध संकल्पों का भोजन हो,
संग पावनता के जल का।
जग में रहना, जल में जैसे खिलता फूल कमल का।।
कर्म करें योगी बनकर,
संकल्प रखें न फल का।
एक लगन में रहें मगन, हर विघ्न लगेगा हल्का।।
न बीती बात का चिंतन हो,
न सोचें ज्यादा कल का।
वर्तमान को सफल करें तो तन-मन रहेगा हल्का ।।

◆◆◆

श्री वसीम मिन्हास
व.अनुवादक

राष्ट्र के विकास में युवा शक्ति का योगदान

युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र की सबसे मूल्यवान संपत्ति है। कोई भी महत्वपूर्ण बदलाव अथवा क्रांति या विचारधारा युवा शक्ति के बिना सशक्त नहीं बन सकता। दरअसल यही वह मूल कारक है जिसके ऊपर राष्ट्र का निर्माण आधारित होता है। विश्व के इतिहास में युवाओं के देशभक्ति, त्याग, वीरता के अनगिनत उदाहरण स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। स्वाधीनता संग्राम में अनेक युवाओं ने अपना बलिदान देकर आजाद भारत की नींव रखी। फ्रांस, इस्राइल, इंडोनेशिया, वियतनाम, यूनान, ईरान आदि देशों में भी युवाओं ने अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य से देश को सही दिशा प्रदान की।

भारत में युवाओं की संख्या अन्य देशों से अधिक है। यहाँ की लगभग 65% जनसंख्या की आयु 35 वर्ष से कम है। इसीलिए भारत को युवाओं का देश कहा जाता है। भविष्य में भारत एक सबल तथा समर्थ राष्ट्र के रूप में विश्व में अपनी पहचान तभी दर्ज कर सकता है, जब युवा शक्ति के सार्थक एवं सकर्मक निवेश को अमली जामा पहनाया जा सके। दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे आज के युवा वर्ग पर 'खाओ पियो और मौज करो' की संस्कृति बुरी तरह हावी है। अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों से पूर्णतया विमुख वे अपनी शक्ति एवं ऊर्जा गलत मुठभेड़ों में नष्ट कर रहे हैं। निरंतर बढ़ती हुई बेकारी उन्हें जबर्दस्ती अपराध कर्म में झोंक रही है। आज पढ़े - लिखे डिग्रीधारी हताश नवयुवकों का नौकरी के अभाव में पथभ्रष्ट, कुंठित, हीनताग्रस्त, अनुशासनहीन एवं स्वेच्छाचारी हो जाना बहुत अस्वाभाविक भी नहीं है। ऐसे में युवाओं की समस्याओं को समझना तथा उनके यथासंभावित हल ढूँढना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। बहुत जरूरत है ऐसी नयी शिक्षा नीति की जो ज्ञानप्रदायिनी होने के साथ - साथ अधिकाधिक रोजगारोन्मुखी हो।

पीढ़ीगत वैचारिक द्वंद्व भी सक्रिय पीढ़ी की दिशाहीनता का एक प्रमुख कारण है। पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी की सोच में आज एक लम्बा फासला आ गया है। पुरानी पीढ़ी जिन परम्पराओं - मान्यताओं से गहरे रूप से जुड़ी है, नयी पीढ़ी के लिए उसका कोई मूल्य नहीं है। दूसरी ओर पुरानी पीढ़ी भी युगीन बदलावों के साथ चलना और बदलना नहीं चाहती। जबकि आवश्यकता है पीढ़ीगत अंतराल और सोच में परस्पर सामंजस्य बिठाने की। युवाशक्ति और प्रतिभा का विदेश पलायन वर्तमान समय एवं सभ्यता का बहुत बड़ा संकट है। युवाशक्ति के इस विस्थापन से राष्ट्र विकास में व्यवधान की बहुत बड़ी गुंजाईश बची रह जाती है। आज के युवा ही भावी समाज और राष्ट्र के कर्णधार हैं। अतः उन्हें राष्ट्रहित को सर्वोपरि समझते हुए देश की उन्नति व प्रगति में अपना पूर्ण योगदान देना चाहिए।

युवाओं की प्रज्ञा, मेधा, अदम्य साहस, जीवटता, उत्साहवृत्ति, प्रज्ज्वलित मष्तिष्क में राष्ट्र विकास की अनंत संभावनाएँ निहित होती हैं। नवजागरण कालीन पुरोधाओं ने भी देश-जागरण के लिए भारत की युवा शक्ति को बहुत महत्व दिया था। भारतीय युवा सन्यासी स्वामी विवेकानंद को युवा पीढ़ी की क्षमता और परिवर्तनकारी शक्ति पर अटूट विश्वास था। उन्होंने 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' के महामंत्र से युवा शक्ति का आवाहन किया तथा उनकी शक्ति को पहचाना। प्रति वर्ष 12 जनवरी को स्वामी जी के जन्म दिवस पर राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया जाता है। मौजूदा विषम एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में देश के युवा यदि अपने अन्दर दृढ़ इच्छाशक्ति, राष्ट्रीयता, त्याग, चेतना, अनुशासन के संस्कार विकसित कर सकें तभी राष्ट्रीय युवा दिवस का परम उद्देश्य साधित हो पाएगा।

युवा शक्ति राष्ट्र को उन्नति के चरम शिखर पर पहुँचा सकती है। समकाल में गरीबी, भ्रष्टाचार, राजनीतिक गलाजत, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, धार्मिक उन्माद इत्यादि समस्याएँ राष्ट्र के सामने यक्ष प्रश्न की भांति खड़ी हैं। कहना न होगा कि इन समस्याओं के चक्रव्यूह को केवल युवा वर्ग रूपी अभिमन्यू ही तोड़ने में समर्थ हो सकता है।

◆ ◆ ◆

एक चिंतन

श्रीमती धरित्री परिडा
पत्नी, श्री दिलीप परिडा
व.ले.प.

एक बार मैं ट्रेन से मुंबई जा रही थी। सफर के दौरान अचानक मेरा ध्यान किताब बेचते एक व्यक्ति पर पड़ा। वो व्यक्ति यात्रियों को खाना खजाना, व्यंजन, उपन्यास, फिल्मों के गाने, फ़ैशन संबंधी तथा विविध मासिक पत्रिका/ किताबें बेचने हेतु दिखा रहा था। गौर से देखा तो यह पता चला कि वो दिव्यांग था। दुःख की बात यह थी कि उस दिव्यांग व्यक्ति के दोनों हाथों के पंजे नहीं थे। फिर भी वो आराम से अपना काम कर रहा था। मुझे यह देख कर अच्छा लगा कि दिव्यांग होने के वावजूद वो मेहनत करना चाहता था तथा अपने मेहनत की कमाई खाना चाहता था। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता था। वो किसी के सामने हाथ फैलाना नहीं चाहता था। ऐसा लगा कि वो जरूर एक स्वाभिमानी व्यक्ति होगा। पर विडम्बना यह थी कि सफर कर रहे यात्रियों में से कोई भी उससे किताबें नहीं खरीदा। कुछ समय पश्चात वो दूसरे डिब्बे की ओर चला गया।

थोड़ी देर के बाद एक भिखारी डिब्बे के अंदर आया तथा हाथ फैला कर मांगने लगा। यात्रियों ने अपनी उदारता दिखाते हुए उसे पैसे तथा चिल्लर दी। इन दोनों घटनाओं को देख कर मैं सोचने को काफी मजबूर हुई। अक्सर हम भिखारियों को तो दिखावे के लिए कुछ पैसे तथा वस्तु दान कर देते हैं। पर मेहनत करने वालों को मदद करने के लिए हम कुछ भी नहीं करते। पर हकीकत यह है कि मुफ्त में मिली रकम से ज्यादा खुशी तो अपनी मेहनत की कमाई से होती है। इसीलिए हमें भिखारियों के मदद करने के बजाय मेहनत करने वालों की मदद करनी चाहिए। इस दिशा में समाज में लोगों को अपने नज़रिये में बदलाव लाने की ज़रूरत है। जो इंसान स्वाभिमानी है और वो किसी के सहारे तथा सहानुभूति से ज़िंदगी गुजारने के बजाय अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है, हमें उसकी जरूर मदद करनी चाहिए। हो सकता है कि इसी से ही लोगों को मांगने के बजाय काम करने की प्रेरणा मिले।

कहने का तात्पर्य यह है कि सजगता, कर्मठता एवं सक्रियता से काम करने वालों को प्रोत्साहन मिलना ही चाहिए। इससे व्यक्ति में काम के प्रति समर्पण की भावना बढ़ती है।

◆ ◆ ◆

एहसास प्यार का

श्री दिलीप परिडा
व.ले.प.

प्यार की परिभाषा जानने से पहले
रिश्तों के मायने समझने से पहले
दिल धड़कने की उम्र आने से पहले
वो आ गयी थी मेरे मन के आँगन में
तू कहते कहते कब बन गई थी तुम
यह न मुझे पता चला न उसको
न तो उसने कुछ कहा न मैंने
पर न कहते हुए भी बहुत कुछ कह गई थी वो
बहारों के मौसम में खो जाने से पहले
जैसे कि भीग गया था मैं प्यार की बरसात में
ऐसा लगता है जैसे कि कई सदियों से
प्यार करता आया हूँ मैं उसी से ...

◆ ◆ ◆

जीवन का लक्ष्य

श्री किशन चतुर्वेदी
भाई सुश्री नीलम, क.हि.अ.

क्या आपने कभी सोचा है कि इस भाग दौड़ की जिंदगी में देश को किसकी आवश्यकता है। जी हाँ! हम उन बच्चों, उन युवाओं के बारे में बात कर रहे हैं जो आने वाले भविष्य के निर्माता हैं। युवा हमारे राष्ट्र का भविष्य हैं। राष्ट्र निर्माण में इनकी अहम भूमिका होती है। कुछ बच्चे ऐसे होते है, जो यूँ ही पढ़ते है, उनका कोई लक्ष्य नहीं होता। परंतु कुछ ऐसे होते हैं, जिनका कोई लक्ष्य है। जिनका लक्ष्य होता है, वे वहाँ पहुँचना चाहते हैं तथा पहुँचने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं।

सभी को अपने जीवन का लक्ष्य अवश्य ही निर्धारित कर लेना चाहिए। लक्ष्य होगा तो आप उसे पाने का प्रयास करेंगे और उसके लिए उचित समय देंगे। सभी को लक्ष्य के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए। अगर आप कभी असफल हो जाएँ, तो आपको घबराने या हार मानने की आवश्यकता नहीं, बल्कि दुगुने जोश, उमंग, उत्साह के साथ पुनः प्रयास करना चाहिए। आपके द्वारा किया गया कार्य निरर्थक नहीं जाता, उसका कुछ न कुछ परिणाम अवश्य मिलता है। जितना बड़ा लक्ष्य होगा, आप उसे पाने के लिए उतना ही प्रयत्न करेंगे। छोटे लक्ष्य लापरवाही ला सकते हैं, किन्तु बड़े लक्ष्य के लिए हम दृढ़ता पूर्वक परिश्रम करते हैं। क्योंकि यह कहा भी गया है कि

''लक्ष्य जितना ऊँचा होता है,
तीर उतना ऊपर जाता है।''

अतः यह कहा जा सकता है कि लक्ष्य का हमारे जीवन में बड़ा महत्व होता है। बिना लक्ष्य के मनुष्य पशुओं के समान होता है।

◆ ◆ ◆

'अभिवादन'

श्रीमती कीर्ति गाडगे
व.ले.प.अ.

मेरे पिता श्री विनायक वासुदेव मोहरील इस वर्ष अक्टूबर माह में 91 साल में पर्दापण कर रहे हैं। वे एक अच्छे इंसान ही नहीं अपितु अपने कार्यकाल में यूनियन में राष्ट्रीय स्तर के प्रामाणिक नेता भी रह चुके हैं और आज भी पेन्शनर्स असोएिशन के पदाधिकारी हैं। उनकी खासियत है कि इस उम्र में भी सुबह शाम दो किलोमीटर साईकिल की सवारी करते हैं। इस पत्रिका के माध्यम से मेरा उनको अभिवादन।

यूँ तो वो एक है छोटा सा दिया
किन्तु उसकी रोशनी ने पूरा आसमान जगमगा दिया।
मज़दूरों के मसीहा हैं वो
तो पीड़ितों के अल्लाह!
वृद्धों के लिये भगवान तो आम
आदमी के लिये इंसान।
सेवा ही पूजा है, मंदिर है यूनियन का दफ्तर।
साईकिल है उनके शान की सवारी,
दक्षिण से लेकर उत्तर तक नहीं है कोई दूरी।
ठंड, धूप या बारिश की कभी नहीं की परवाह
आज भी पेन्शनर्स असोसिएशन के आधार स्तंभ हैं,
पेन्शनर्स को अविरत सेवा देना यही तो मकसद है।
उनके कार्य को आगे बढ़ाना, पीड़ितों को न्याय दिलाना,
मज़दूरों को उनका हक दिलवाना यही हमारा मकसद है।
सही रास्ते पर चले तो विजय हमारी है।
अंत में मैं ईश्वर से उनके लंबी उम्र की कामना करती हूँ।

◆ ◆ ◆

उम्मीद पर दुनिया कायम है

श्रीमती कल्याणी
श्री मधुसूदन आचार्य व.ले.प.
शाखा कार्यालय मुंबई, की बहन

एक बार की बात है, एक घर में पाँच दीपक प्रज्ज्वलित हो रहे थे।

पहला दीपक का नाम उत्साह, दूसरे दीपक का नाम शांति, तीसरे दीपक का नाम हिम्मत, चौथे दीपक का नाम समृद्धि और पाँचवें दीपक का नाम उम्मीद था।

पहला दिया बोलता है कि इतनी जल कर, इतना रोशनी देकर क्या फायदा? फिर भी लोगों को कदर नहीं, तो जलने का क्या फायदा ऐसा कहकर वह दिया बुझ जाता है। जानते हो वह कौन सा दिया होता है? वह दिया है उत्साह का प्रतीक, दूसरा दिया शांति का प्रतीक होता है, वह बोलता है शांति तथा चेतना फैलाने के बावजूद लोग लड़ रहे हैं, अशांति फैला रहे हैं तो जलने का क्या फायदा? यह बोलकर वह दिया भी बुझ जाता है। उत्साह और शांति का दिया बुझने के बाद हिम्मत के प्रतीक, तीसरे दिये की भी हिम्मत टूट जाती है और वह भी बुझ जाता है। उत्साह, शांति और हिम्मत के दिये को बुझता देख चौथा दिया, समृद्धि का प्रतीक भी बोलता है उत्साह, शांति और हिम्मत ने अपना साथ छोड़ दिया तो मेरे जलने से क्या मतलब? वह भी बुझ जाता है। उसी दौरान उस घर में एक लड़का प्रवेश करता है और वह देखता है कि एक प्यारा सा, छोटा सा दिया जल रहा है बाकी दिए बुझ चुके हैं, उसको देखकर अच्छा लगता है और वह छोटे से दिये से बुझे हुए चारों दियों को पुनः प्रज्वलित कर देता है और फिर से पाँचों दिये प्रज्वलित हो उठते हैं। वह छोटा सा दिया उम्मीद का दिया था जिसने चारों दियों को प्रज्वलित किया, इसलिए जीवन में कभी निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि उम्मीद पर दुनिया कायम है।

◆ ◆ ◆

वो बचपन भी कितना सुहाना था

श्री हेमन्त गहरवार
स.ले.प.अ., शाखा कार्यालय
मुंबई

वो बचपन भी कितना सुहाना था
जिसका रोज़ एक नया फ़साना था।
कभी पापा के कंधों का,
तो कभी माँ के आँचल का सहारा था।
कभी बेफिक्री मिट्टी के खेल का
तो कभी दोस्तों का साथ मस्ताना था।
कभी नंगे पाँव वो दौड़ का,
तो कभी पंतग ना पकड़ पाने का पछतावा था।
कभी बिन आँसू रोने का,
तो कभी बात मनवाने का बहाना था।
सच कहूँ तो वो दिन ही हसीन थे,
ना कुछ छुपाना और दिल में है जो बात बताना था।

◆ ◆ ◆

श्री जे. के. तागडे
व.ले.प.अ.
शाखा कार्यालय मुंबई

जो भी होता है अच्छे के लिए होता है

एक बार की बात है,एक राजा और एक मंत्री थे। मंत्री राजा को आश्वासन देने के लिए हमेशा, राजा को बोलता था, जो भी होता है अच्छे के लिए होता है। राजा इसको सुन कर कभी-कभी अनदेखा कर देता था। एक दिन राजा शिकार के लिए अपनी तलवार को धार कर रहा था कि तभी उसकी छोटी उंगली का एक हिस्सा कट जाता है और उसमें से खून निकलने लगता है। उसको बहुत दर्द हो रहा होता है, वहाँ मंत्री जी आते हैं। राजा की उंगली लहु-लुहान देखकर मंत्री जी उनकी पीड़ा को कम करने हेतु बोलते हैं, ''जो भी होता है अच्छे के लिए होता है।'' यह सुनकर राजा को गुस्सा आता है और राजा मंत्री को 5 दिनों के लिए जेल में डाल देता है। मंत्री को थोड़ा दुख होता है लेकिन वह राजा की बात को मान कर जेल चला जाता है। राजा बोलता है, क्यों अब नहीं बोलोगे जो भी होता है अच्छे के लिए होता है। फिर राजा जंगल में शिकार करने जाता है। तभी उसको जंगली लोग पकड़ लेते हैं और उसकी बलि देने जाते हैं। तभी एक जंगली सरदार राजा के हाथों की कटी उंगली को देखता है और बोलता है कि इसकी उंगली कटी हुई है, इसीलिए इसकी बलि नहीं दे सकते हैं। जंगली लोग उस राजा को वही छोड़ देते हैं। इन सब घटनाओं को झेलने के बाद, राजा को मंत्री की याद आती है। वह तुरंत मंत्री को छुड़वा देता है और अपने पास बुलाता है। मंत्री को गले लगाकर बोलता है कि आप सही बोलते थे, जो भी होता है अच्छे के लिए होता है, लेकिन यह जो भी हुआ मेरे लिए अच्छा हुआ, आपके लिए तो कारावास थी। मंत्री बोलता है अगर मैं कारावास में बंद नहीं होता तो मैं आपके साथ शिकार पर चलता और आप कटी उंगली के कारण बच जाते लेकिन वह जंगली लोग आपको छोड़, मुझे मार देते। इसका मतलब, जो भी होता है अच्छे के लिए होता है।

◆◆◆

सुश्री नीना वर्मा
व.ले.प.अ.

होली

होलिका को करो नमन बार-बार,
जला दो इसमें छल-कपट अहंकार
रंग-बिरंगा त्यौहार है आया,
प्यार का रंग वह साथ है लाया।
अबीर-गुलाल के छाये बादल,
पिचकारी की बारिश करे घायल।
बसंत ऋतु की छायी है मस्ती,
दहके टेसू, महके महुवा रंगी है बस्ती।
गुझिया-पकवानों की शान निराली,
भांग की गोली में उमंग मतवाली।
प्रकृति जैसी रंग-बिरंगी होली
मुझे भी रंग दे ऐसे ही हमजोली।
भीगे दामन, भीगे चोली,
भीगे तन-मन खेलो ऐसी होली।
जात-पात का झगड़ा मिटाती,
ऊंच-नीच का भेद भुलाती।
हो ननद-देवर-भाभी या जीजा-साली
रिश्तों की गरिमा समझाती होली।
हर छोटा-बड़ा करे आज ठिठोली,
बुरा ना मानो होली है होली।

◆◆◆

अंजाम

श्रीमती अर्चना राज चौबे
पत्नी, श्री आर. के. चौबे, व.ले.प.अ.

तुम अगर प्रस्तुत नहीं लज्जा हनन को
मूढ हो फिर
और तनिक सी धर्मद्रोही भी सखी,
सिर झुकाये हो खड़ी यदि
कसे जिह्वा पर हो ताला
तब ही तुम रह पाओगी स्त्री सजीव,
नोंचने को सब यहाँ तैयार बैठे
खींचने हर श्वांस अब हर देह से तैयार बैठे
तब भी वो जी लेंगे जीव
हंस संकेंगे रह सकेंगे
वो सहज स्वीकार्य हैं पर तुम नहीं
कि तुम अपावन हो चुकी हो
तुम पतित हो तुम ही कुत्सित
हो भले तुम रक्तरंजित,
दुधमुहीं भी हैं जहाँ पर मात्र भोग्या
बस जरा सा रस लिया था
डर से फिर रेता गला था
हो गया तो हो गया इसमें बुरा क्या
आहह ईश्वर... हो कहीं तुम?
ना सखी कोई नहीं है
खुद ही हो अब सज्ज रण लड़ना ही होगा
ये सबक उनकी समझ मढ़ना ही होगा
कर प्रहार उनको ये चेतावनी दें
अब भी गर वो नहीं संभले
तब उन्हें मरना ही होगा
हो भले अंजाम कुछ।

◆ ◆ ◆

वर्तमान

श्री नीरज मंथापुरवार
पुत्र श्री आर. के. मंथापुरवार,
व.ले.प.अ.

मंजर तो वही हैं जाना पहचाना,
लोगों की मुस्कुराहटें दिखती नहीं हैं
कैसे पहचानेंगे हम अपनों को,
कि चेहरों को अब कोई खुले रखते नहीं हैं।
शक तो करते थे अपनों पर पहले भी बहुत,
अब यह हालात खुले आम हो गए हैं
गले मिलकर पूछ लेते थे हाल एक दूसरे का,
पता नहीं वे पल कहाँ खो गए हैं ।
मत लगाओ मोल अपनों का, यह हर किसी से अनमोल होते हैं
बंद कर दो सभी दरवाजे घर के, कि कीमती चीजों को हम तालों में रखते हैं।
जकड़ देते हैं पैरों को जंजीरों से,
अरमानों की झोली खूटियों से टांग देते हैं
फिर मना लेंगे खुशीयों को वैसे ही झूमकर,
जैसे मुद्दतों बाद दो प्रेमी मिलते हैं।
करीब हैं हमेशा अपनों के जो आज बहुत दूर दिखाई देते हैं
और जो पास हैं हम सभी के,
बीच उनके फासले साफ दिखाई देते हैं।
यह कैसी वक्त की लाचारी है,
कि इंसान इसानों के पास आने से भी डरते हैं
मंदिर, मस्जिद, गिरजों में नहीं,
अब फरिश्ते तो रास्ते व अस्पतालों में मिलते हैं।
कहाँ हैं आजाद गलियारे, रोशन सड़कें,
सुहानी शाम के वे नजारे, पता नहीं शहर का मेरे क्या इरादा है
गुलज़ार करेगें फिर से नंदनवन यहीं पर,
हम सब मिलकर यह वादा करते हैं।

◆ ◆ ◆

वनों की पुकार

श्री रणजीत बहादुर
स.ले.प.अ.

अब तो जागो, अब तो जागो,
धरती माता के पुत्रों सब,
अब तो जागो, अब तो जागो,
किस नींद में डूबे सोए हो,
अब तो जागो, अब तो जागो।
वो धवल धरा, सब हरा भरा,
उस युग को कर लो याद जरा,
जब धरती पर हरियाली थी,
नदियाँ, जंगल, पर्वत, वनचर,
सब तरफ बहुत खुशहाली थी।
जंगल में कलख फैला था,
पंछी सब गीत सुनाते थे,
हरियाली से हर इक कोना
खुशबू में भीगे जाते थे।
पर तुमने ऐसा काम किया,
जंगल का काम तमाम किया,
रौंदा धरती की छाती को,
काटा वृक्षों को चुन-चुनकर।
अपनी सुविधा के स्वार्थवश
जंगल को लूटा जी भरकर।।
हरियाली को खोती-खोती,
धरती माता है तड़प उठी,
सुन सकते तो सुनकर देखो,
कुदरत की चीख पुकार बड़ी।
आँखों में आँसू लेकर,
धरती अब तुम्हें पुकार रही।
अपने ही पुत्रों से अपनी,
जीवन की भिक्षा माँग रही।
उठो चलो अब तो जागो,
रोको जंगल को कटने से।
लग जाओ वृक्षारोपण में
कुछ खुद से भी कुछ अपनों से।
सब मिलकर हाथ बटाओ अब,
घर-घर पेड़ लगाओ अब।
धरती की करूण पुकार सुनो,
हरियाली को फैलाओ अब।
इस युग की यही पुकार अभी,
मानवता की दरकार यही
पेड़ों पर बस हम दया करें,
अगली पीढ़ी का भला करें।
प्रण ले लो अब हरियाली का,
धरती की खुशहाली का।
अब भी सोए रह गए अगर,
तो बहुत-बहुत पछताओगे।
निःसर्ग की तांडव लीला में,
मिट जाओगे, बह जाओगे।
कुछ करो उठो हे मानव तुम,
अब तो जागो, अब तो जागो
किस नींद में डूबे सोए हो
अब तो जागो, अब तो जागो।

◆◆◆

श्री आर. के. मंथापुरवार
व.ले.प.अ.

बेचैनी

कहाँ खो गई है रौनक शहर की मेरे?
यह किसकी नजर लग गई है?
यह कैसी अनजानी फिक्र व्यक्तित्व पर छा रही है!
ऊर्जा से भरे लोग मेरे क्यों शक्तिहिन हो गये हैं?
बस्तियां सूनी सड़कें खामोश शहर वीराने हो गये हैं।
लगता है हर शख्स एक दूसरे से अनजाने हो गये हैं।
पक्षियों की चहचहाहट वाली सुबह-शामें देख प्रकृति भी पूछती है
कहाँ खो गये हैं साथी मेरे जिनकी मुझमें भी हिस्सेदारी है?
हर शख्स के दिल में बेचैनी, चेहरे पर उदासी दिखती है।
कल क्या होगा यह सभी की आशा भरी निगाहें पूछती हैं।
लाचारी से फिर करिश्मे की बाट मानव देख रहे हैं।
सहारे के लिये अब हर हाथ ऊपर की तरफ उठ रहे हैं।
यह कैसा मंजर इंसान तो क्या अब भगवान भी नजरबंद हो गये हैं।
मंदिर, मस्जिद, गिरजे में नहीं, फरिश्ते खाकी व सफेद कपड़ों में दिखने लगे हैं।
ताली, थाली, शंख की ध्वनि, दीपमाला की भावना उन्हें अर्पण हैं।
दुआ करो यश मिल इनके हाथों को, सुना है हर दवा नाकाम हो गई है।
निर्मम प्रतियोगिता में शामिल हम अविवेचित हो गये हैं।
छोड़ सुरक्षा अपनों की सभी लापरवाह हो गये हैं।
दौड़ते हैं अपरिचित मंजिल पाने को सदा दिन-रात,
अब पैर हमारे अनजान भय से खुद ही रुक गये हैं।
हर हालात इशारे से समझाने के लिये काफी होते हैं
जिने के लिये तो बस चंद निवाले ही पर्याप्त होते हैं।
फिर भी क्यों जोड़ रहे हैं सामान हम बरसों का?
जबकि आने वाली सांसों का भी तो हमें ऐतबार नहीं है।
लंबी छलांग लगाने के लिये दो कदम पीछे आना पड़ता है।
ऊँची उड़ान भरने से पहले थोड़ा रुक जाना पड़ता है।
उड़ने के मौके फिर बहुत आयेंगे जीवन में –
उड़ने से पहले पंखों में बल भरना अच्छा होता है।
हालात ये भी सुधरेंगे अच्छे दिन फिर आने वाले हैं,
तू हौसला रख मंजिल अपनी-अपनी फिर हम पाने वाले हैं।
इतिहास ने हमें हर बार यही मंत्र सिखाया है,
संयम रखो, संयम से हारती बाजी भी जीत जाते हैं।

◆ ◆ ◆

जीवन का सार

श्री मयंक सोनी
भाई, सुश्री मोनिका सोनी
डी.ई.ओ.

बड़े और छोटे को, खरे और खोटे को,
सबको करो जी भर तुम प्यार, प्यार है जीवन का सार।
ये हिन्दू वो मुस्लिम, बातें हैं ये जिस्मानी,
एक ईश्वर के हम सब बच्चे, रिश्ता अपना रूहानी!
देह भान की मिट्टी में, बस पलते हैं विकार,
बड़े और छोटे को, खरे और खोटे को, ...
नफरत से तो बढ़ेगी नफरत, प्यार से बढ़ेगा प्यार,
गुस्से से तो बढ़ेंगी दूरियाँ और बढ़ेगा अहंकार।
जो मीठा है वह फूल है, कड़वा है तो वह खार,
बड़े और छोटे को, खरे और खोटे को, ...
न मेरा है न तेरा है कुछ, सोच मत बेकार,
स्वार्थ में डूबकर, मत कर जीवन को तार-तार।
मिले जो मेहनत से जीवन में, उसे करो स्वीकार,
बड़े और छोटे को, खरे और खोटे को, ..
जिसे न जीत सको ताकत से, प्यार से उसे हराओ,
जो मिल न सके दौलत से, प्रेम से उसे पाओ।
प्रेम में तुम आजमा लो, ताकत है होती अपार,
बड़े और छोटे को, खरे और खोटे को, ...
दुख से ध्यान हटाकर देखो, खुशियाँ है अनेकों प्रकार,
मिलकर यहाँ रहना है सबको, जैसे एक परिवार।
कर्म सदा अच्छे करो, यही है जीवन का आधार,
बड़े और छोटे को, खरे और खोटे को, ...

◆ ◆ ◆

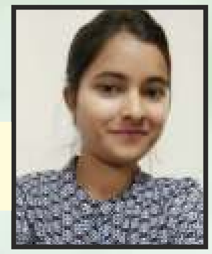

ज़िंदगी

सुश्री मोनिका सोनी
डी.ई.ओ.

चार अक्षरों का शब्द है तू,
पर हजारों तेरे नाम है ज़िंदगी।
न जाने क्यों आज दर-बदर हो रही है बदनाम ज़िंदगी!
कभी हँसाती कभी रुलाती एक उलझी सी पहेली है ज़िंदगी।
कभी गरीब की कुटिया कभी राजा की हवेली सी है ज़िंदगी।
जिसने समझ लिया उसके लिए खुशियों से महका बागान है ज़िंदगी।
और जो उलझ गया उसके लिए सिमटा हुआ कब्रिस्तान है ज़िंदगी।
पहली सांस और आखरी मुस्कान के बीच मिला वक़्त है ज़िंदगी।
खुशियाँ है तो नरम और गम है तो थोड़ी सख्त है ज़िंदगी।
बिना टिकट के कभी किया था जो वो सफर है ज़िंदगी।
जिन रास्तों पर भटक गए थे वो अंजान डगर है ज़िंदगी।
माँ के हाथों की बनी सूखी रोटी और अचार है ज़िंदगी।
बचपन में टीचरों से पड़ी डंडे की प्यार भरी मार है ज़िंदगी।
जहां मरती हैं लाखों ख्वाहिशें ऐसा शमशान है ज़िंदगी।
किसी के लिए मुश्किल तो किसी के लिए आसान है ज़िंदगी।
हाँ है ज़िंदगी मुश्किल मेरे दोस्त -
पर कर जाए तू कुछ ऐसा कि बैठा हो तू चुप-चाप
और बोल जाए तेरी कामयाबी सब कुछ, तो तेरा वो मुकाम है ज़िंदगी।
कि तू पड़ा हो बिस्तर पर और सामने हो मौत खड़ी -
जो आ जाए तेरे चेहरे पर वो मुस्कान है ज़िंदगी!
बस इतनी सी पहचान है ज़िंदगी।

◆ ◆ ◆

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र,नागपुर

हिंदी सप्ताह 2021 के आयोजन पर विवरणात्मक रिपोर्ट

कोरोना संबंधी दिशानिर्देशों की अनुपालना सुनिश्चित करते हुए कार्यालय में हिंदी सप्ताह 2021, दिनांक 14-09-2021 से 20-09-2021 तक सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। शाखा कार्यालय, मुंबई ने भी इसमें बढ़-चढ़ कर सहभागिता की तथा इसके सफल आयोजन के लिए अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

हिंदी सप्ताह-2021 का उद्घाटन दिनांक 14.09.2021 को एम.एस. टीम्स ऐप द्वारा अध्यक्ष, श्री वेंकटसामी आर. तिरुपती, महालेखाकार की गरिमामयी उपस्थिति के बीच किया गया। 14 सितम्बर, 2021, हिन्दी दिवस के अवसर पर राजभाषा विभाग से प्राप्त निदेश के अनुसरण में, राजभाषा अधिकारी श्री एच. टी. फुलपाड़िया ने कार्यालय के सभी कार्मिकों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलवाई ताकि सभी कार्मिक भारतीय संविधान में उल्लेखित राजभाषा संबंधी दायित्वों का निर्वहन कर सकें। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश पठन, श्रीमती पी.एस. सर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी ने किया।

दिनांक 15.09.2021 को निबंध लेखन प्रतियोगिता, दिनांक 16.09.2021 को चित्र पर आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता तथा दिनांक 17.09.2021 को टिप्पणी तथा परिपत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में इस कार्यालय तथा शाखा कार्यालय मुंबई के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। हिंदी सप्ताह, 2021 का समापन समारोह,एम.एस. टीम्स ऐप द्वारा दिनांक 20.09.2021 को संपन्न हुआ। समापन समारोह की अध्यक्षता राजभाषा अधिकारी/ वरिष्ठ उपमहालेखाकार /प्रशासन, श्री एच. टी. फुलपाड़िया ने की। इस अवसर पर हिंदी सप्ताह, 2021 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणामों की घोषणा की गयी। राजभाषा अधिकारी महोदय ने पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के प्रयासों को सराहा तथा विजेताओं को बधाई दी। तत्पश्चात समापन समारोह में राजभाषा सम्मान पुरस्कार, 2020-21 की घोषणा की गयी। राजभाषा अधिकारी महोदय ने सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर धन्यवाद ज्ञापन श्री के. के. पांडे, स.ले.प.अ./हिन्दी अनुभाग ने प्रस्तुत किया।

हिंदी सप्ताह 2021 का समग्र संयोजन एवं संकल्पना राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन, श्री एच. टी. फुलपाड़िया के कुशल मार्गदर्शन में, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग, श्रीमती पी.एस. सर्मा तथा स.ले.प.अ./हिन्दी अनुभाग श्री के. के. पांडे तथा श्रीमती नीरजा टंडन ने किया। श्री वसीम मिन्हास, वरिष्ठ अनुवादक, सुश्री नीलम देवी, कनिष्ठ अनुवादक, श्री श्रीकांत शुक्ला, वरिष्ठ लेखापरीक्षक तथा कु. मोनिका सोनी, डी.ई.ओ. ने इसकी सफलता हेतु प्रयास किए ।

◆ ◆ ◆

हिन्दी सप्ताह 2021 के अवसर पर पुरस्कार वितरण की झलकियाँ

राजभाषा अधिकारी महोदय आयोजन समिति के सदस्यों को सम्मानित करते हुए।

हिन्दी सप्ताह 2021 के अवसर पर पुरस्कार वितरण की झलकियाँ

राजभाषा अधिकारी महोदय विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए।

लेखापरीक्षा के पन्नों से ...

जनजातीय विकास विभाग

निष्क्रिय व्यय

टाइप प्लान के उल्लंघन के कारण रु. 165 लाख का निष्क्रिय व्यय एवं रु. 13.50 लाख के छात्रावास किराए का परिहार्य भुगतान।

जनवरी 2007 में आदिवासी छात्रों की शिक्षा हेतु बेहतर छात्रावास सुविधाएं प्रदान करने के लिए, आदिवासी विकास विभाग, महाराष्ट्र राज्य सरकार ने 125 छात्रों के रहने के लिए टाइप प्लान अर्थात भू-तल के साथ दो मंज़िले छात्रावास भवन के निर्माण के लिए मानदंड जारी किए।

अक्टूबर 2010 में आदिवासी विकास विभाग ने भंडारा जिले के तुमसर तालुका में लड़कों तथा लड़कियों दोनों के लिए 125 छात्रों की क्षमता वाले दो छात्रावास भवनों के निर्माण, जिसमें प्रत्येक भवन के निर्माण में रु 1.72 करोड़ की लागत आनी थी, के लिए प्रशासनिक स्वीकृति दी।

एकीकृत आदिवासी विकास परियोजना कार्यालय, भंडारा के लेखापरीक्षा में यह पाया गया कि लोक निर्माण मंडल, नागपुर ने अक्टूबर 2012 में रु 1.52 करोड़ की लागत वाली केवल भू-तल तक सीमित, महिला छात्रावास भवन तथा रु 1.46 करोड़ की लागत वाली भू-तल के साथ प्रथम तल तक सीमित, पुरुष छात्रावास भवन के निर्माण का तकनीकी अनुमोदन प्रदान किया था। टाइप प्लान का यह उल्लंघन साइट के असमतल होने के कारण था जिसे फिर से भरने/ समतल करने के अतिरिक्त काम की आवश्यकता थी।

नवंबर 2016 में दोनों छात्रावासों के निर्माण का कार्य पूरा हो गया और इनको एकीकृत आदिवासी विकास परियोजना, भंडारा को सौंप दिया गया। परंतु, लड़कियों के लिए बनाए गए छात्रावास भवन को खाली रखा गया और लड़कों के लिए बनाए गए छात्रावास भवन, जिसकी क्षमता केवल 64 छात्रों को ही रखने की थी, उसमें 94 लड़कियों को रखा गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि छात्रावास भवनों का निर्माण टाइप प्लान के अनुसार नहीं किया गया था। लड़कों को एक किराए के छात्रावास भवन में रखा गया और 2016-2019 के दौरान रु 13.50 लाख के छात्रावास किराए का भुगतान किया गया।

दिसंबर 2016 में सरकार को टाइप योजना के अनुसार छात्रावास भवनों के निर्माण के लिए संशोधित प्रशासनिक स्वीकृति का प्रस्ताव दिया गया।

इसके परिणामस्वरूप, आदिवासी छात्रों को उचित सरकारी छात्रावास सुविधाओं से वंचित करने के अतिरिक्त,महिला छात्रावास के निर्माण पर रु 1.65 करोड़ का निष्क्रिय व्यय और रु 13.50 लाख के किराए का परिहार्य भुगतान हुआ।

योगदानकर्ता :

श्री एच. एस. हिंडारिया,

स.ले.प.अ.

लेखापरीक्षा के पन्नों से ...

सामाजिक न्याय और विशेष सहायता विभाग

निजी भूमि पर सरकारी धन का अनियमित व्यय

सामाजिक न्याय और विशेष सहायता विभाग द्वारा सरकारी निर्देशों के अनुपालन में विफलता के परिणामस्वरूप डॉ बी. आर. अंबेडकर के व्यक्तिगत सामानों के लिए नागपुर के चिंचोली में निजी भूमि पर 22.15 करोड़ रुपये की लागत पर स्मारक और संग्रहालय का अनियमित निर्माण हुआ।

विदर्भ विकास कार्यक्रम 2009-10 के तहत, मार्च 2011 में, सामाजिक न्याय और विशेष सहायता विभाग (महाराष्ट्र राज्य सरकार) ने नागपुर के चिंचोली में गैर सरकारी संगठन की निजी भूमि पर स्मारक संग्रहालय, ध्यान केंद्र और सामाजिक-संस्कृति प्रशिक्षण केंद्र निर्माण करने का निर्णय लिया।

इस उद्देश्य से सरकार ने मार्च 2011 में नागपुर विकास प्राधिकरण को नोडल एजेंसी घोषित किया और समाज कल्याण विभाग, नागपुर विकास प्राधिकरण और गैर सरकारी संगठन के बीच त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन निष्पादित करने का निर्देश इस शर्त के साथ दिया कि पहले गैर सरकारी संगठन को भूमि, सामाजिक न्याय और विशेष सहायता विभाग को हस्तांतरित करना पड़ेगा तथा तत्पश्चात नागपुर विकास प्राधिकरण को निर्माण कार्य शुरू करना होगा तथा कार्य पूर्ण होने पर, नागपुर विकास प्राधिकरण को सामाजिक न्याय और विशेष सहायता विभाग को परियोजना सौंपना होगा। मई, 2011 से सामाजिक न्याय और विशेष सहायता विभाग ने नागपुर विकास प्राधिकरण को लागत देना शुरू किया।

तदनुसार, अगस्त 2012 में नागपुर विकास प्राधिकरण, गैर सरकारी संगठन तथा समाज कल्याण विभाग के बीच एक त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन निष्पादित किया गया। जनवरी 2013 में गैर सरकारी संगठन और समाज कल्याण विभाग के बीच परियोजना के निष्पादन हेतु एक अनुबंध निष्पादित किया गया जिसमें कहा गया कि उक्त भूमि को विकास कार्य के लिए समाज कल्याण विभाग को हस्तांतरित किया जा रहा है। जून 2016 में समाज कल्याण विभाग के निर्देश पर, नागपुर विकास प्राधिकरण ने कार्य प्रारंभ किया और मार्च 2019 तक 22.15 करोड़ रुपये खर्च किए । फिर भी ,समाज कल्याण विभाग द्वारा कार्य शुरू होने से पहले, गैर सरकारी संगठन से सामाजिक न्याय और विशेष सहायता विभाग को भूमि का हस्तांतरण सुनिश्चित नहीं किया गया।

इस बीच, दिसंबर 2015 में, महाराष्ट्र राज्य सरकार ने अनुसूचित जाति और नव-बुद्ध समुदाय के महान व्यक्तियों के स्मारक के निर्माण तथा उनके ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों के विकास हेतु गैर सरकारी संगठनों को अनुदानों के आबंटन को नियंत्रित करने वाले नियमों को इस शर्त के साथ जारी किया कि इन गैर सरकारी संगठनों के साथ अनुबंध में, नियमों और शर्तों के उल्लंघन होने पर,ब्याज सहित एक मुश्त में अनुदान राशि की वसूली हेतु एक उपनियम होना चाहिए। यधपि,नागपुर विकास प्राधिकरण ने जून 2016 में कार्य आदेश जारी किया, फिर भी समाज कल्याण विभाग इस कार्य को शुरू करने से पहले गैर सरकारी संगठन के साथ समझौता ज्ञापन / अनुबंध में उक्त वसूली की शर्त को शामिल करने में विफल रहा।

जुलाई 2017 में, गैर सरकारी संगठन ने सामाजिक न्याय और विशेष सहायता विभाग को भूमि हस्तांतरित करने में असमर्थता जताई।

इसके परिणामस्वरूप निजी भूमि पर सरकारी धन का अनियमित व्यय हुआ ।

योगदानकर्ता : श्री एच. एस. ढोंडरीकर, व.ले.प.अ.

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपुर में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुचारू रूप से जारी है। राजभाषा विभाग के निदेशानुसार वर्ष 2020-21 तथा 2021-22 की विगत तिमाहियों की प्रगति रिपोर्टों को ऑनलाइन प्रेषित किया गया। विभिन्न अनुभागों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की गई तथा संबंधित अनुभागों को अपेक्षित सुधार करने को कहा गया।

कोरोना काल में सोशल डिसटेंसिंग के नियमों का पालन करते हुए जनवरी–मार्च 2021 की राजभाषा कार्यान्वयन की तिमाही बैठक दिनांक 28.05.2021 को एम.एस.टीम्स ऐप के माध्यम से प्रधान महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में आयोजित की गई। राजभाषा की प्रगति से संबंधित सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई तथा कार्यालय में राजभाषा का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने पर बल दिया गया। हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु वर्ग–क में से वित्त मुख्यालय–II अनुभाग को तथा वर्ग–ख में से डी.पी. सेल/ई सी पी ए–I अनुभाग को महालेखाकार चल शील्ड प्रदान की गयी।

अप्रैल–जून, 2021 की राजभाषा कार्यान्वयन की तिमाही बैठक दिनांक 30.09.2021 को एम.एस.टीम्स ऐप के माध्यम से महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में आयोजित की गई। राजभाषा की प्रगति से संबंधित सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई तथा कार्यालय में राजभाषा का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने पर बल दिया गया। हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु वर्ग–क में से वित्त मुख्यालय–II अनुभाग को तथा वर्ग–ख में से आंतरिक नमूना जाँच विभाग अनुभाग को महालेखाकार चल शील्ड प्रदान की गयी।

◆◆◆

हिंदी कार्यशाला

कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन को सरल एवं सहज बनाने हेतु हिंदी अनुभाग द्वारा प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इसमें अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। कोरोना काल में सोशल डिसटेंसिंग के नियमों का पालन करते हुए अप्रैल–जून, 2021 की अवधि की कार्यशाला दिनांक 22-06-2021 तथा 23-06-2021 को तथा जुलाई–सितंबर, 2021 की अवधि की कार्यशाला दिनांक 06-09-2021 तथा 07-09-2021 को एम.एस.टीम्स ऐप के माध्यम से आयोजित की गई ।

◆◆◆

रश्मि के 32 वें ई-अंक का विमोचन

कोविड-19 महामारी के बढ़ते प्रसार के मद्देनजर तथा पर्यावरण सजगता के प्रति हमारे कार्यालय की प्रतिबद्धता को ध्यान मे रखते हुए कार्यालय की गृह पत्रिका रश्मि के 32 वें अंक को ई-पत्रिका के रूप मे प्रकाशित किया गया तथा इसका विमोचन महालेखाकार महोदया द्वारा राजभाषा अधिकारी तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण की सीमित उपस्थिति में महालेखाकार महोदया के कक्ष में दिनांक 19.03.2021 को किया गया। राष्ट्रीय एकता के संवर्धन, सद्भावना तथा सौहार्द की भावना के प्रसार के उद्देश्य से रश्मि पत्रिका के 32 वें ई-अंक को त्यौहार विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया।

पत्रिका का ई-संस्करण कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र नागपुर की कार्यालयीन वेबसाइट www.cag.gov.in/ag/nagpur/en पर निम्न पाथ (path) पर पढ़ने हेतु उपलब्ध है-कार्य-प्रशासन-राजभाषा- हिंदी पत्रिका रश्मि (Function- administration- Rajbhasha- Hindi Magazine Rashmi)।

राजभाषा सम्मान पुरस्कार वर्ष 2021

केंद्र की नीति के अनुसार सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग प्रेरणा ,प्रोत्साहन एवं सद्भावना से बढ़ाया जाना है। इस परिप्रेक्ष्य में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने हेतु, प्रति वर्ष कार्यालय द्वारा उन कार्मिकों को राजभाषा सम्मान पुरस्कार प्रदान किया जाता है जिन्होंने विगत वित्त वर्ष के दौरान हिंदी में सर्वाधिक हस्तलिखित/टंकित कार्य किए हैं। अप्रैल, 2020 से मार्च, 2021 की अवधि के दौरान कार्यालय के निम्नलिखित कार्मिकों को हिंदी में सर्वाधिक हस्तलिखित/टंकित कार्य करने हेतु राजभाषा सम्मान पुरस्कार प्रदान किया गया–

1.	श्री विपिन वर्मा, स.ले.प.अ./समन्वय अनुभाग	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री एन.आर.पौनीकर, व.ले.प./विधि प्रकोष्ठ	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री दिलीप कुमार परिडा, व.ले.प./विधि प्रकोष्ठ	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री वीरेंद्र सिंह, ले.प./ परिवहन समूह	चतुर्थ पुरस्कार
5.	श्री एस. आर. वाघोदे, व.ले.प./आ.न.जा.वि.	सांत्वना पुरस्कार

नराकास पुरस्कार वितरण समारोह वर्ष 2021

(i) वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र, नागपुर को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

(ii) वर्ष 2019-20 के राजभाषा पत्रिकाओं की गृह पत्रिका श्रेणी में कार्यालय की गृह पत्रिका रश्मि को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

(iii) वर्ष 2020-21 में नराकास के सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र, नागपुर के पाँच कार्मिकों ने निम्नलिखित पुरस्कार प्राप्त किए।

क्र. सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम	प्रतियोगिता का नाम	नराकास द्वारा घोषित पुरस्कार
1.	श्रीमती रिंकू सिन्हा, स.ले.प.अ.	चित्र पर आधारित कहानी लेखन	द्वितीय
2.	श्री सुरंजन दास, एम.टी.एस.	गीत गायन (युगल)	तृतीय
3.	श्री प्रिंस कुमार, एम.टी.एस.	गीत गायन (युगल)	तृतीय
4.	श्रीमती रिंकू सिन्हा, स.ले.प.अ.	राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता	तृतीय
5.	श्री वीरेंद्र सिंह, लेखापरीक्षक	हिंदी श्रुतलेख	प्रोत्साहन-2
6.	श्री मुकुल अनसिंगकर, व.लेखापरीक्षक	प्रतीक चिन्ह (लोगो)	प्रोत्साहन-2

राजभाषा नियम, 1976

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976

(यथा संशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

सा.का.नि. 1052– राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है. अर्थातः

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ

a. इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है।

b. इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

c. राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएँ– इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न होः

a. अधिनियम से राज अधिनियम 1963 (1963 को 19) अभिप्रेत हैः

b. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है अर्थातः

c. केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालयः

d. केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय, और

e. केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

f. कर्मचारी से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है:

g. अधिसूचित कार्यालय से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

h. हिन्दी में प्रवीणता से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है:

i. 'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

j. 'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

k. 'क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

l. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है।

3. राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र क में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को

छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से

a. क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए। आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे;

b. क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य में किसी को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

3. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

4. उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, 'क्षेत्र ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' या 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं। परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करें।

4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि

a. केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं,

b. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे;

c. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं. पत्रादि हिन्दी में होंगे,

d. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं.

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करेः

e. क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं।

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करेः

परन्तु जहाँ ऐसे पत्रादि

i. क्षेत्र 'क' क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित है वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

ii. क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबंधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

5. हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर –

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी,हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में हिन्दी में दिए जाएंगे।

6. हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग –

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित करते कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती है, निष्पादित की जाती है और जारी की जाती है।

7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि –

1. कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।

2. जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हो, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।

3. यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना –

1. कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करें।

2. केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

3. यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

4. उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण ओर ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।

9. हिन्दी में प्रवीणता –

यदि किसी कर्मचारी ने –

a. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

b. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

c. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

10. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान –

1. a. यदि किसी कर्मचारी ने –

i. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

ii. केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीक्षा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

iii. केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

b. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

3. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

4. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

11. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि–

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी. मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

12. अनुपालन का उत्तरदायित्व –

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह –

(i) यह सुनिश्चित करें कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और

(ii) इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2. केंद्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय–समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

[भारत का राजपत्र भाग–2, खंड 3, उपखंड (1) में प्रकाशनार्थ]

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(का-1) नागपुर

संयोजक : पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, नागपुर

प्रमाण-पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, नागपुर को वर्ष 2019-20 में प्रकाशित गृह पत्रिका 'रश्मि' के लिए नराकास(का-1) द्वारा तृतीय पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

ए.के. शर्मा

पावरग्रिड POWERGRID

27 अगस्त, 2021

पार्श्व पृष्ठ का परिचय

टोक्यो ओलंपिक 2020 भारत के ओलंपिक सफर का सबसे महत्त्वपूर्ण वर्ष माना जाता है। नीरज चोपड़ा ने जैवलिन थ्रो में स्वर्ण पदक जीत कर न केवल इतिहास रचा है, परंतु अंतर्राष्ट्रीय खेल इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में सम्पूर्ण राष्ट्र का नाम दर्ज किया है। मीराबाई चानु ने टोक्यो ओलंपिक खेलों में भारत के लिए रजत पदक जीत कर यह दिखाया कि भारत की बेटियाँ भी पुरुषों से कम नहीं। इसके साथ ही 49 वर्षों के अथक परिश्रम के बाद भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने कांस्य पदक जीत कर विश्व भर में अपनी जीत का परचम लहराया है, जिससे सभी भारतीयों में गर्व की भावना उत्पन्न हुई है।

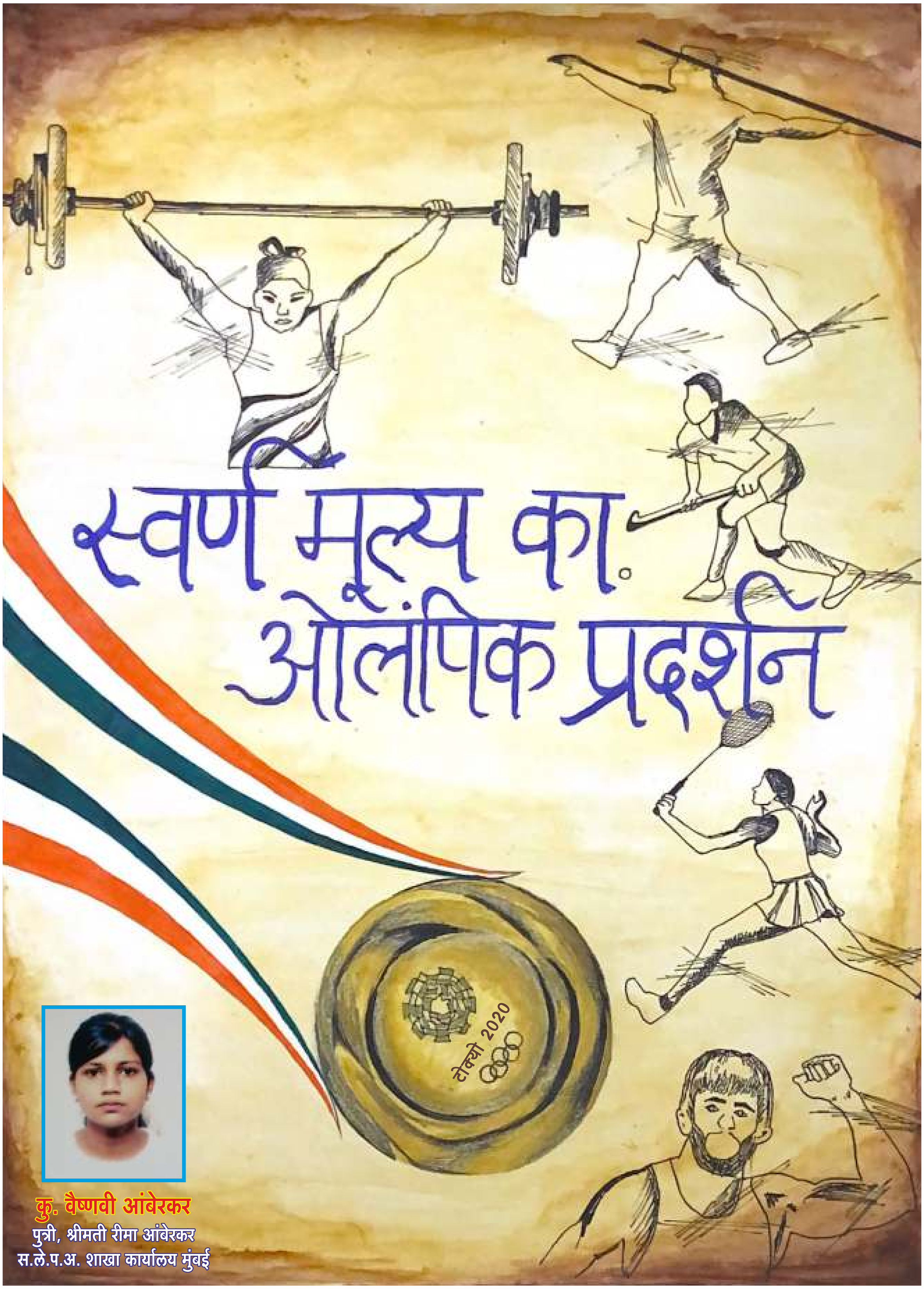

कु. वैष्णवी आंबेरकर
पुत्री, श्रीमती रीमा आंबेरकर
स.ले.प.अ. शाखा कार्यालय मुंबई